ISSN 0975-735X

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

54

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

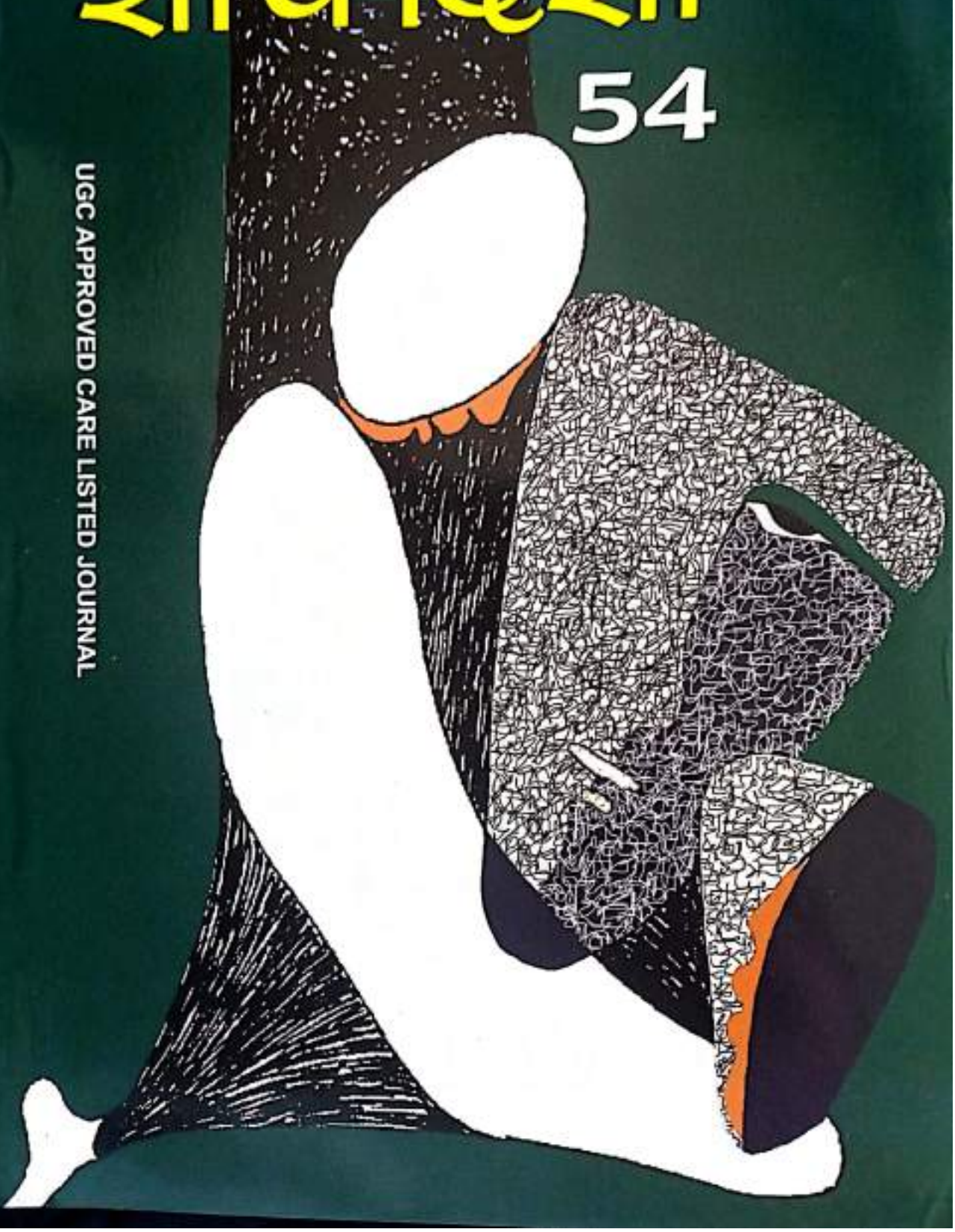

Scanned with CamScanner

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 54/2 | अप्रैल-जून 2021 | 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

Scanned with CamScanner

उषाकिरण खान के उपन्यास 'गई झुलनी टूट' में लोकजीवन/ **अलका कुमारी, प्रो॰ सुचित्रा मलिक** 267
चंद्रकांता की कहानियों में पारिवार : भूमंडलीकरण के संदर्भ में/ **ए॰ निशा, डॉ॰ बी॰ कामकोटि** 271
समकालीन हिंदी कविता में दलित चेतना का सौंदर्यशास्त्र/ **प्रदीप कुमार ठाकुर** 275
उदयप्रकाश की कहानियों में सामाजिक समस्याएँ : दलित चेतना के संदर्भ में/ **मिनी॰ एस॰, डॉ॰ बी॰ कामकोटि** 279
मधु कांकरिया के कथासाहित्य में महानगरीय झुग्गी-झोपड़ी जीवन/ ऋतु 282
किसान जीवन की त्रासदी : 'अकाल में उत्सव' के संदर्भ में/ **मु॰ जाहिद रजा सिद्दीकी** 288
काशीनाथसिंह : कहनी उपखान के प्रथम खंड 'एक शुरुआत' की कहानियों से गुजरते हुए, **डॉ॰ (श्रीमती) निर्मला त्रिपाठी** 294
निराला की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना और मुक्ति का स्वर/ **डॉ॰ उमेश कुमार पांडेय** 299
21वीं सदी हिंदी कहानी में चित्रित पारिवारिक जीवन आधुनिकता का प्रभाव : बदलती संवेदना, मूल्य व संबंध/ **रचित पांडेय, डॉ॰ क्रांतिबोध** 306
श्रीमद्भगवद्गीता में मानसिक रोग का स्वरूप एवं समाधान : एक विवेचनात्मक अध्ययन/ **मनोज रतूड़ी, डॉ॰ सुरेंद्रप्रसाद रयाल** 312
सामाजिक संगठन एवं योग/ **डॉ॰ संदीप वेदालंकार** 318
पर्यावरण अवनयन एवं मूल्यांकन और नियंत्रण के उपाय/ **अभिषेक कुमार यादव** 327
प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा का साहित्यिक अवदान/ **डॉ॰ योग्यता भार्गव** 333
वायुप्रदूषण और भारत/ **सुदीप पांडेय** 342
स्त्री लिंगी विमर्श और भाषा/ **डॉ॰ सोफिया राजन** 347
कबीर के काव्य में उलटबासियाँ एवं प्रतीक/ **डॉ॰ बी॰आर॰ बद्री** 351
असगर वजाहत कृत नाटक 'गोडसे/गांधी.कॉम' में वैचारिक द्वंद्व/ **सोनम सिंह** 355
डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक' के साहित्यिक एवं राजनीतिक जीवन का समाज को अवदान/ **ममता कुँवर, प्रो॰ सुचित्रा मलिक** 359
आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के संदर्भ में हिंदी और पंजाबी के उद्भव आधार/ **सपना सैनी, डॉ॰ सुधा जितेंद्र** 365
अलका सरावगी के कथासाहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव/ **बिरारी पोपट भावराव** 373
डॉ॰ परशुराम शुक्ल के बालनाटकों में मंचीयता/ **तितिक्षा जी वसावा** 376
The Concept Of Idial Teacher And His Role In Dharmashashtra/ **Jyoti goud** 381
Impact of Rural Development Programmes .../ **Dr.Reenu Rani Mishra** 384
रामेश्वर कांबोज की साहित्यिक साधना का आलोचनात्मक विन्यास : गद्य-तरंग/ **प्रो॰ स्मृति शुक्ल** 388

 ISSN 0975-735X

Scanned with CamScanner

मधु कांकरिया के कथासाहित्य में महानगरीय झुग्गी-झोपड़ी जीवन

ऋतु
वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय,
गजरौला (उ॰प्र॰)

मधु कांकरिया हिंदी महिला कथाकारों में एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 ई॰ को कलकत्ता के निम्न मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। महानगर में जन्मी मधु कांकरिया ने महानगरीय जीवन को नजदीक से देखा और भोगा है। उन्होंने महानगरीय समाज की सामाजिक व्यवस्थाओं के यथार्थ को अपने कथासाहित्य में चित्रित किया है। उन्होंने अपने कथासाहित्य में महानगरीय समाज की विषमताओं का यथार्थपरक वर्णन प्रस्तुत किया है। महानगरों में जहाँ एक ओर बहुमंजिला इमारतें दृष्टिगोचर होती हैं जो हर प्रकार की सुविधाओं से युक्त हैं तो दूसरी ओर महानगरों के बीच नरकतुल्य झुग्गी-झोंपड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। कथाकार मधु कांकरिया ने इन झुग्गी-झोंपड़ियों में रहनेवाले अति निम्नवर्ग की समस्याओं को अपने कथासाहित्य में स्थान दिया है। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जैसे महानगरों में 'स्लमस' एक गंभीर समस्या बनते जा रहे हैं। इन नारकीय बस्तियों में नशावृत्ति, गरीबी, पानी की समस्या, गंदगी की समस्या, वेश्यावृत्ति, यौनशोषण तथा आर्थिक समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

झुग्गी-झोंपड़ी की अवधारणा–महानगरों को प्राय: औद्योगिक नगरों के रूप देखा जाता है। रोजगार की तलाश के लोग महानगरों में प्रवास करते हैं। प्रवासी के लिए आवास एक गंभीर समस्या है। प्रवासी लोग रेलवे लाइन, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों व महानगरों के समृद्ध क्षेत्रों में झुग्गी-झोपड़ियों का निर्माण करके रहते हैं। महानगरीय सड़कों के फुटपाथों पर झुग्गी-झोंपड़ियाँ अस्तित्व में आ चुकी हैं। फुटपाथ भिखारियों के स्थाई विश्रामगृह बन चुके हैं। महानगरों की बढ़ती जनसंख्या भी झुग्गी-झोपिड़यों के अस्तित्व का मूल कारण है। महानगरों में बढ़ती झुग्गी-झोपिड़याँ महानगरीय प्रशासन और सरकार की विफलता की ओर इशारा करती हैं। उद्योगों में काम करने वाले श्रमिक अपनी सुविधानुसार अपनी आवासीय व्यवस्था को कायम कर रहे हैं। महानगरों में बढ़ती आवास की समस्या ने नारकीय बस्तियों के विकास में अहम् भूमिका निर्वहन की है। महानगरों में इन नारकीय बस्तियों को अलग-अलग नाम से संबोधित किया जाता है, जैसे–घटों, झुग्गी-झोपड़ी, चॉल तथा खोली आदि। हंटर के अनुसार, 'स्लम (झोंपड़पट्टी) वह रिहायशी इलाका है जिसमें गृह-प्रबंधन इतना अधिक खराब, इतना अधिक घटिया और इतना अधिक अस्वस्थ्यकर होता है कि यहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा, नैतिकता और कल्याण के लिए खतरा बन जाता है।"[1] महानगरीय झोंपड़ियों में सुविधाओं का अभाव दिखाई पड़ता है। इन झुग्गी-झोंपड़ियों में गंदगी, पीने के पानी की समस्या, शौचालय, बिजली आदि का अभाव दिखाई

ISSN 0975-735X

Scanned with CamScanner

पड़ता है। कलीनॉर्ड लिखते हैं, 'आमतौर पर एक स्लम (झोपड़ पट्टी) को अव्यवस्थित गृह व्यवस्था, सीमित सुविधाओं, अत्यधिक भीड़ तथा स्थान-संकुलन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।'[12] उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि झुग्गी-झोपड़ियों में अव्यवस्था का बुरा आलम होता है, जहाँ भीड़ अधिक होती है और सुविधाओं की कमी होती है। कलीनार्ड द्वारा दी गई परिभाषा 'स्लम' को पूर्णरूप से परिभाषित करती है।

मधु कांकरिया के कथासाहित्य में महानगरीय झुग्गी-झोंपड़ी जीवन

औद्योगिकरण ने महानगरों में आवास की समस्या को विकराल बना दिया है। महानगरों में प्रवासियों की बढ़ती जनसंख्या ने झुग्गी-झोपड़ियों के विकास में अहम् भूमिका निर्वहन की है। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता जैसे महानगरों में बढ़ती झुग्गी-झोपड़ियाँ महानगरीय विकास को ठेंगा दिखाती दृष्टिगोचर हो रही हैं। मधु कांकरिया ने कलकत्ता जैसे महानगर में झुग्गी-झोपड़ियों के जीवन को नजदीक से देखा है। उन्होंने इस अति निम्नवर्ग की पीड़ा को अपने कथासाहित्य के माध्यम से उजागर किया है।

गंदगी एवं पानी की समस्या–महानगरों में गंदगी और पीने के पानी समस्या बहुत ही गंभीर है। इन झुग्गी झोंपड़ियों में गंदगी का आलम है। इन झुग्गी-झोपड़ियों को गंदगी का पर्यायवाची कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। 'पत्ताखोर' उपन्यास का प्रमुख पात्र आदित्य नशे की आदत के कारण घर से भागकर आत्महत्या करने का विचार करता है। वह रेलवे स्टेशन के साथ लगती झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले अति निम्नवर्ग के जीवन स्तर को देखकर हैरान हो जाता है। आदित्य के शब्दों में, 'सियालहद और मौलाली के फुटपाथों से गुजर रहा था कि उसने देखा–बस्तियाँ ही बस्तियाँ, खुली गँधाती, बजबजाती भरी-भरी गृहस्थियाँ। कुछ ईट, दो बाँस, उपयोग की हुई, बैटरी और पोलिथीन के सहारे फुटपाथों पर ही बनी खुली भूरी काली गृहस्थियाँ, मोबाइल और फोल्डिंग गृहस्थियाँ।'[13]

'पत्ताखोर' उपन्यास में महानगरीय गंदगी के यथार्थ को चित्रित किया गया है। कथाकार के शब्दों में 'अढ़ाई हजार लोगों की उस बस्ती में न तो कोई पेड़, न पत्ती, न चिड़िया। चिलचिलाती धूप और पानी का टोटा। थोड़ा-बहुत पानी मिल भी जाता, वह भी दूषित।'[14] महानगरीय झुग्गी-झोपड़ियों में पानी की किल्लत को इस उपन्यास में कथाकार ने गंभीरता से चित्रित किया है। इन झुग्गी बस्तियों में रहनेवाले लोग पानी लेने के लिए सुबह जल्दी उठकर लाइन लगा लेते हैं। कथाकार के शब्दों में–'दस-बारह घरों के बीच नगर निगम का एक सार्वजनिक नल। इस कारण साढ़े तीन बजे से ही नल पर लोग मंजन करने, नहाने, पानी भरने और कपड़ा धाने के लिए आना शुरू कर देते। साढ़े पाँच-छह बजे तक खासी भीड़ जमा हो जाती।'[15] आदित्य झुग्गी झोपड़ी के सामने रात गुजारने के लिए गली में ही लेट जाता है। गली में रहने वाले श्वान में से कोई एक आदित्य के हाथ पर मूत्र विसर्जन कर डालता है। वह अपना हाथ धोने के लिए पानी की तलाश करता है। वह मोहन की पुत्री से टॉयलेट के बारे में पूछता है। वह शरमाकर हँस दी। 'बस्ती के बाकी लोग तो मुँह अँधेरे ही किसी गली-कूचे की नाली पर बैठ जाते हैं।'[16] मधु कांकरिया ने बड़ी सूक्ष्मता से इन झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले लोगों की दयनीय स्थिति का यथार्थपरक चित्रण अपने कथासाहित्य में प्रस्तुत किया है। महानगरों के पास इलाकों में बनी

Scanned with CamScanner

झुग्गी-झोपड़ियाँ महानगरीय विकास रूपी चाँद पर लगे ग्रहण का छाया चित्र हैं। मधु कांकरिया का कथासाहित्य यथार्थ के अधिक निकट दिखाई पड़ता है। प्रत्येक महानगर में झुग्गी-झोपड़ियाँ अस्तित्व में हैं। उन्होंने कलकत्ता जैसे महानगर की 'स्लमस' के यथार्थ को अपने कथासाहित्य में उकेरा है। कथाकार के शब्दों में, 'ऐसे में अक्सर रास्ते में स्याही के धब्बे-सी कचरे के ढेर पर पसरी झुग्गी-झोंपड़ियाँ जो औद्योगिकरण और शहरीकरण का बाई प्रोडक्ट थीं, पर नजर पड़ जाती जहाँ सारे दैन्य, बेचारगियों लाचारियों और अभावों के बावजूद जीवन साँस ले रहा था। ईश्वरीय आस्था बरकार थी। लगभग हर घर में राजा रामचंद्र, जानकी माई, लक्ष्मण भैया, हनुमान जी, शिवजी, काली माई दीवारों पर चिपके हुए थे और कहीं-कहीं घर के बाहर गमले में तुलसी चौरा। कहीं बेशर्मी से बहते खुले नालों की गंदगी में लिपटे लोग थे तो कहीं तपती गर्मी में भी घोड़ों की तरह बीच सड़क पर नंगे पैर दौड़ते-हाँफते पसीने में तर-बतर हाथ रिक्शे वाले थे।"[7] महानगरों में पानी की किल्लत महानगरीय विकास पर प्रश्नचिह्न लगाती है। पेयजल की समस्या दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है। इसी उपन्यास की पात्र कल्याणी पानी की समस्या को उजागर करते हुए कथाकार मधु कांकरिया को संबोधित करते हुए कहती है, 'दीदी, दरवाजा खोल दीजिए जाऊँगी, 'इतनी जल्दी।' नींद में ही कुनमुनाई। 'जल्दी कहाँ देरी हो गई, अँधेरा घटने लगा, अभी नहीं निकली तो संडास में लंबी लाइन लग जाएगी, फिर पानी की भी लाइन लगानी है, देर हो गई तो पानी नहीं मिलेगा।'[8] कथाकार मधु कांकरिया कलकत्ता महानगरीय विकास के यथार्थ को उजागर करते हुए कहती हैं, 'आज कलकत्ता को देखकर उसे सहसा वही दो विरोधी गालों वाले राक्षस की स्मृति हो आई। एक तरफ विक्टोरिया मेमोरियल, विशाल राजभवन, नेशलन लाइब्रेरी, बड़े-बड़े चर्च, होटल बंगाल ताज, होटल, बिड़ला मंदिर, फोर्ट विलियम, लाल बाजार थाना, कलकत्ता म्यूजियम, मेट्रो रेल और गगनचुंबी अट्टालिकाएँ हैं तो दूसरी तरफ बजबजाती गंदगी और सड़ाँध के बीच हजारों झुग्गी-झोपड़ियाँ, कीड़ों की तरह सड़क पर बिलबिलाती जिंदगियाँ। सड़क पर ही मुँह अँधेरे छुपकर नित्यकर्म से निवृत होते लोग। कूड़ों के ढेर से अन्न बीनते भिखारी।'[9]

निर्धनता–महानगरीय जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग बेरोजगारी और निर्धनता का शिकार है। महानगरीय आर्थिक विषमताओं के परिणामस्वरूप अपराध में वृद्धि हो रही है। झुग्गी-झोंपड़ियों में रहनेवाले लोगों को दो वक्त का भोजन मिलना मुश्किल हो गया है। छोटे-छोटे बच्चे मजदूरी करते दिखाई पड़ते हैं। रिक्शा चालकों को भरपेट भोजन मिलना मुश्किल हो गया है। रिक्शाचालक इतवारी की आर्थिक स्थिति का यथार्थ कथाकार के शब्दों में, 'कमाई का भैया... बस यही समझ लो कि पेट का गड्ढा भर जात है।'[10] 'हम यहाँ थे' उपन्यास में निर्धनता के परिणामस्वरूप बढ़ती बाल मजदूरी का यथार्थपरक चित्रण करते हुए कथाकार कहती है कि 'मुझे अपने ही मुहल्ले में चाय की दुकान पर काम करते बबलू की याद आई जो महज दस साल का था, फटी बनियान, नंगे पैर...मैंने एक बार पूछा भी था दुकानदार से कि इतना छोटा सा बच्चा किस प्रकार उसकी मदद कर सकता है तो उसने जवाब दिया कि यह छोटा नहीं वरन् अपने घर का बड़ा है, इसकी मेहनत से इसके घर का चूल्हा जलता है।'[11] 'पत्ताखोर' उपन्यास का पात्र आदित्य नशे की लत के कारण घर से भागकर झुग्गी-झोपड़ियों को अपने निवास के रूप में चयन करता है। हेमंत बाबू को आदित्य के नए ठिकाने की जानकारी मिलती है, वे उसको वापिस घर आने की सलाह देते हैं। आदित्य झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले लोगों की निर्धनता पर प्रकाश

ISSN 0975-735X

डालते हुए कहता है, 'अपने सारे काम एक ही कोठरी में कर लेने वालों की इस दुनिया का नरक है। यहाँ की भयंकर गरीबी, यहाँ की गंदगी।'[12] आदित्य कलकत्ता शहर के दोहरे स्वरूप को देख आश्चर्य चकित रह जाता है जब उसे दीवार पर लिखे स्लोगन पर उसकी दृष्टि जाती है, क्लीन कलकत्ता, ग्रीन कलकत्ता। आदित्य के शब्दों में, 'प्रहसनों के देश में एक और प्रहसन! खाने को भात नहीं, सोने को खाट नहीं, नहाने को घाट नहीं, पीने को जल नहीं और बात करते हैं हरियाली की।'[13] महानगरीय झुग्गी-झोंपड़ियों में रहनेवाले लोग आर्थिक समस्याओं से गुजर रहे हैं। झुग्गी-झोंपडियों में रहनेवाले लोग मजदूरी करने के साथ कूड़ा बीनकर अपना गुजर-बसर कर रहे हैं। इन झुग्गी-बस्तियों में कुपोषित बच्चों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। आर्थिक समस्याओं के चलते झुग्गीवासियों को उचित उपचार नहीं मिल पाता है। आर्थिक संकट के बादलों से घिरे इस वर्ग के लोग बीमारियों से ग्रस्त होकर अपनी जान गँवा रहे हैं।

अपराध–बढ़ती महँगाई एवं आर्थिक संकट के परिणामस्वरूप महानगरों में अपराध का ग्राफ बढ़ता ही जा रहा है। अपराध महानगरीय समाज में तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। नशाखोरी, लूटपाट, आर्थिक शोषण, हत्या, बाल अपराध, वृद्धों के प्रति हिंसा, घरेलू हिंसा, बलात्कार जैसे अपराध महानगरीय समाज की नियति बन चुके हैं। महानगरों में बढ़ती अपराधिक घटनाएँ चिंता का विषय हैं। बढ़ते अपराध किसी भी सभ्य समाज पर कलंक तुल्य हैं। अपराध के प्रमुख कारण बेरोजगारी, महँगाई, आर्थिक समस्या आदि हैं। महानगरों में बढ़ती अपराधिक घटनाएँ महानगरीय पुलिस प्रशासन की विफलता का परिणाम मानी जा सकती हैं। अपराध न केवल पॉश इलाकों में ही नहीं, बल्कि झुग्गी-झोपड़ियाँ भी इससे अछूती नहीं हैं। महानगर में अपराध की उपस्थिति सदैव किसी-न-किसी रूप में बनी रहती है। महानगरीय झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले बच्चे बाल अपराधी बन रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चे नशे की दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं। 'पत्ताखोर' उपन्यास का पात्र हेमंत बाबू अपने पुत्र आदित्य की नशामुक्ति हेतु डॉ॰ कोठारी से मुलाकात करता है। डॉ॰ कोठारी नशे की सार्वभौमिकता पर चर्चा करते हुए कहते हैं, 'नशा अब सिर्फ दौलतियों तक ही सीमित नहीं रहा, अब यह बीमारी सर्वव्यापक बन गई है। सड़क पर रहनेवाले फुटपाथी इसके सबसे भयंकर शिकार हैं और सचममुच वे अवाक् रह गए थे। जोड़ागिरजा से रिपन स्ट्रीट के बीच एक कतार में फुटपाथियों को देखा। उन्होंने कहीं जोड़े में तो कहीं तिकड़ी में सिर-से-सिर भिड़ाए...सिर पर मैली-कुचैली चद्दर डाले पन्नी के नीचे मोमबती घुमाते हुए। दूर से उन्हें संदेह-सा ही हुआ था, पर हिम्मत कर ठीक फुटपाथ पर आकर देखा तो दंग रह गए।'[14] बढ़ते नशे ने अपराधों की संख्या में तेजी ला दी है। नशे के लिए धन जुटाने के प्रयास में युवा अपराध जगत् की शरण में आ चुके हैं। मधु कांकरिया का कथासाहित्य यथार्थ के अधिक नजदीक दृष्टिगोचर होता है। महानगरीय झुग्गी-झोंपडियों का जीवन अत्यंत भयानक स्थिति से गुजर रहा है। झुग्गी-झोंपडियों में रहनेवाले बच्चे नशे की गिरफ्त में आ चुके हैं। '...और अंत में ईशु कहानी' का पात्र विश्वजीत कथाकार से झुग्गी-झोंपड़ियों के जीवन के संदर्भ में प्रश्न करते हुए कहता है कि 'कभी गई हैं आप झुग्गी-झोंपड़ियों और बस्तियों के बीच? हावड़ा-सियालदह के प्लेटफॉर्मों पर? फ्लाई ओवर के नीचे बने स्लम के सीलन-भरे तहखानों में? कभी चलिए मेरे साथ, मैं दिखाऊँगा आपको-रिसती-रेंगती अपाहिज जिंदगियाँ...बुढ़ापे को मात करती जवानियाँ, माँ के गर्भ से पैदा होता बुढ़ापा। इन्हीं जगहों पर ढेरों-ढेर ऐसे बच्चे हैं, जिनका बचपन झुलसा हुआ है। जो नशे के

Scanned with CamScanner

कुटेवों के और मस्तानों की वासनाओं के शिकार है।"[15] नशे की प्रवृति ने युवाओं के जीवन को बुढ़ापे में तबदील कर दिया है। युवाओं के चेहरों की रौनक सिरे से गायब हो चुकी है। महानगरीय जीवन में नशे की प्रवृति ने युवाओं का मानसिक संतुलन खराब कर दिया है। जिसके कारण युवा अपराध जगत की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसी संग्रह की कहानी फाइल का पात्र भोला नशे की लत का शिकार हो जाता है। 'भोला! सिनी आशा के फील्ड वर्कर उसे सियालदह स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर पाँच से उठा लाए थे। उसके घुटने फूले हुए थे। यह दर्द के मारे ऐंठ रहा था। वह पत्ताखोर (नशेबाज) था, उसके पिता वैन चलाते थे। सियालदह स्टेशन के पास ही पुल के नीचे उसकी खोलाबाड़ी थी, जहाँ उसकी माँ पाँच-पाँच रुपयों में पत्ताखोरों को नशे के सेवन के लिए खोलाबाड़ी किराए पर देती थी। भोला पत्ताखोर को पन्नी, ब्लेड, मोमबत्ती, दियासलाई पकड़ाते-पकड़ाते स्वयं कब नशे की तान मारने लगा, उसे पता भी नहीं चला। देखते-देखते यह लत बन गई।"[16]

महामारियाँ–महानगरीय झुग्गी-झोंपड़ियों में निवास करने वाला निम्नवर्ग महामारियों का शिकार हो रहा है। इन झुग्गी-झोंपड़ियों में रहनेवाली वेश्याएँ रेडलाइट से रेडक्रास तक सफर करते हुए काल का ग्रास बन रही हैं। 'सलाम आखिरी' उपन्यास कलकत्ता जैसे महानगरों में झुग्गी-झोंपड़ियों में निवास करने वाली वेश्याओं के जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। कथाकार के शब्दों में 'लगभग एक जैसी ही स्थिति सब जगहों की है शत-प्रतिशत निरक्षरता। स्वास्थ्य संबंधी प्राईमरी ज्ञान तक से वंचित। यौवन ढलने तक सभी संक्रामक बीमारियों चर्म रोग एवं एस॰टी॰डी॰ की चपेट में आती हुई अधिकांश वेश्याएँ।"[17] वेश्यागमन के कारण महानगरीय युवाओं में संक्रामक रोग बढ़ रहे हैं। कथाकार के शब्दों में, 'अपनी हर चीज का बीमा करवा डाला उन्होंने। स्वास्थ्य का, आँखों का, चश्मे का... और सोचते थे कि कैप्सूल घर में पूरी तरह हिफाजत से हैं वे। उन्हीं का इकलौता लड़का भरी जवानी में किसी वेश्या के चक्कर में पड़कर संक्रमित हो गया। क्या होगा शाखा को सुरक्षित और पल्लवित कर जब महावृक्ष की जड़ में ही घुन लग हो।"[18]

आज महानगरों में बढ़ती झुग्गी-झोंपड़ियाँ चिंता का विषय हैं। कथाकार मधु कांकरिया ने अपने कथासाहित्य में झुग्गी-झोंपड़ियों के जीवन के कटु सत्यों को उजागर करने का प्रयास किया है। झुग्गी-झोंपड़ियाँ महानगरीय विकास की परिणति पर प्रश्नचिह्न लगाती दृष्टिगोचर होती हैं। झुग्गी झोंपड़ियों में निवास करनेवाले लोग मौलिक आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करते दिखलाई पड़ते हैं। बेरोजगारी, महँगाई तथा आवास की समस्या महानगरीय जीवन की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। महानगरीय झुग्गी-बस्तियों में नारकीय जीवन जीने के लिए बाध्य हैं। इन अभावग्रस्त परिस्थितियों में मूल्यों की रक्षा करना असंभव सा दृष्टिगोचर होता है। इन झुग्गी-झोंपड़ियों की युवापीढ़ी में अपराध के बीज अंकुरित हो रहे हैं। अशिक्षा, मूल्यविहीनता, आर्थिक संकट के चलते महानगरीय युवाओं में स्ट्रेस बढ़ रहा है। छोटे-छोटे बच्चे नशे की गिरफ्त में आ चुके हैं। नशे की पूर्ति के लिए चोरी-डकैती, हत्या, लूटपाट जैसी घटनाएँ आम हो गई हैं। महानगरों के पॉश इलाकों के बीचों बीच झुग्गी-झोपड़ियों का अस्तित्व महानगरीय प्रशासन की विफलता और महानगरीय संकट की ओर इशारा करते हैं। महानगरों में वोट की राजनीति इन झुग्गी-झोंपड़ियों के अस्तित्व में अहम् भूमिका निर्वहन कर रही है। इन झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले लोगों को स्थानीय नेताओं का आश्रय प्राप्त हो रहा है। जब प्रशासन इन झुग्गी-झोंपडियों को हटाने का प्रयास करता है तो राजनीतिक दबाव के चलते कार्यवाही स्थगित हो जाती है। सुप्रीमकोर्ट के फैसले के बावजूद रेलवे लाइनों पर

ISSN 0975-735X

झुग्गी-झोंपड़ियाँ ज्यों-की-त्यों बनी हुई हैं। वोट की राजनीति भी देश को गहरे संकट से गुजरने के लिए बाध्य कर रही है।

संदर्भ

1. हंटर डेविड, द स्लम्स चैलेज एंड रिस्पोंस, द फ्री प्रैस, न्यूयार्क, 1968
2. कालीर्नाड मार्शल श्री, स्लम्स एंड कंयूनिटी डिवेलपमैंट, द फ्री प्रैस, न्यूयार्क, 1966, पृ॰ 3
3. मधु कांकरिया, पत्ताखोर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 149
4. वही, पृ॰ 184
5. वही, पृ॰ 158
6. वही, पृ॰ 154
7. मधु कांकरिया, हम यहाँ थे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 50
8. वही, पृ॰ 102
9. मधु कांकरिया, सलाम आखिरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 94
10. मधु कांकरिया, पत्ताखोर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 211
11. मधु कांकरियां, हम यहां थे, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 53
12 मधु कांकरिया, पत्ताखोर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 211
13. वही, पृ॰ 153
14. वही, पृ॰ 128
15. मधु कांकरिया, और अंत में ईशु, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 8
16 वही, पृ॰ 119
17. मधु कांकरिया, सलाम आखिरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ॰ 86
18. वही, पृ॰ 172

गली नं॰ 4 बी, जीवन विहार एक्टेंशन
सोनीपत, हरियाणा-131001
मो॰ 7015333823, 9416659784

Scanned with CamScanner

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X
UGC Approved
Impact Factor 3.471

शोध दिशा

44

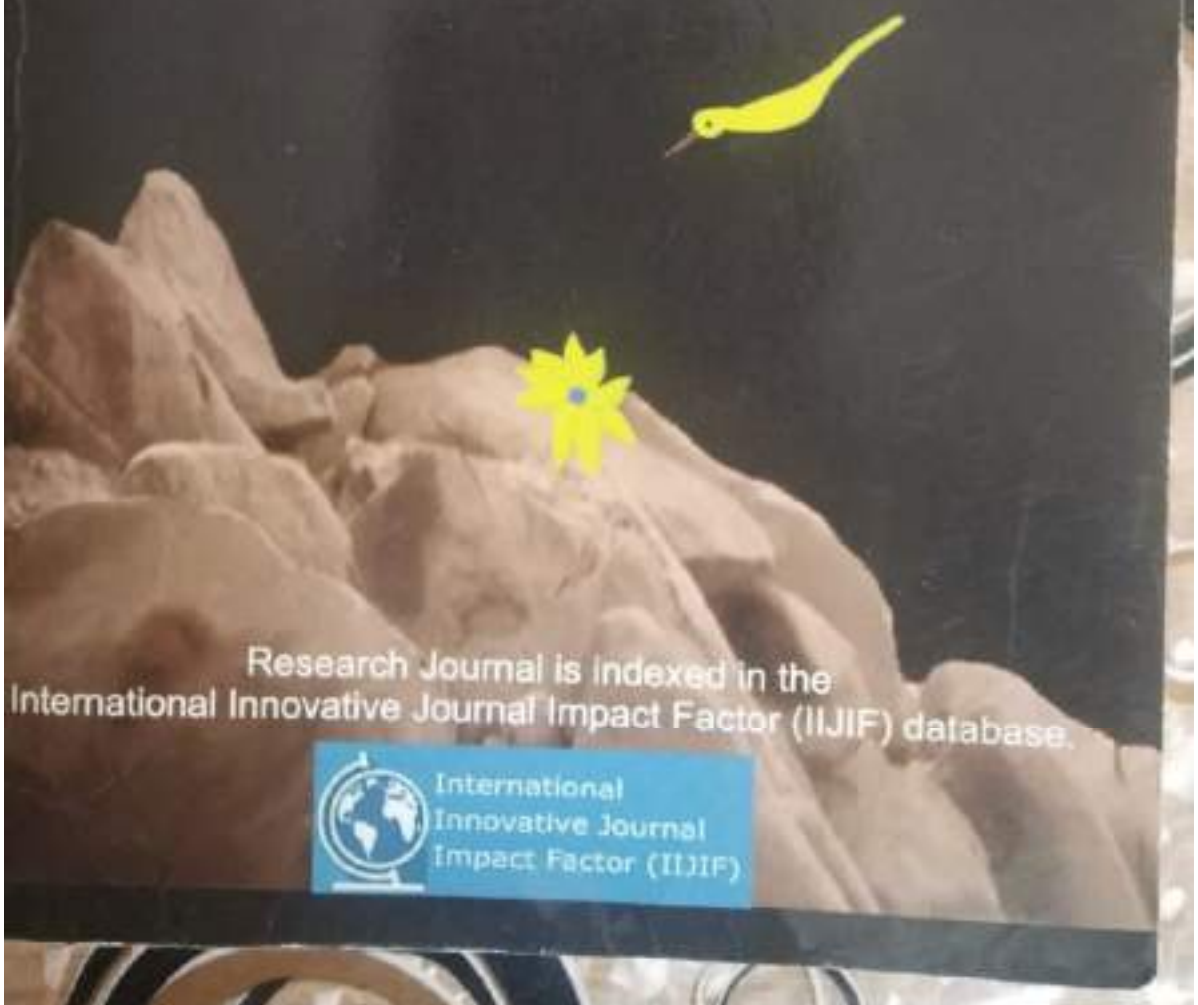

Research Journal is indexed in the
International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF) database.

International
Innovative Journal
Impact Factor (IIJIF)

SHOT ON REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

अनुक्रमणिका / Contents

• शरीन्द्र भटनागर : जीवन और साहित्य	डॉ० महेश 'दिवाकर'	1
	स्वाति रस्तोगी	
• भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी भाषा तथा साहित्य	प्रो० सुशील कुमार शर्मा	6
• भारत विभाजन और अज्ञेय की कहानियाँ	डॉ० इन्दु कनौजिया	10
• ई-लेखन और उसकी महत्वपूर्ण विधा ब्लॉग	डॉ० एकलव्य द्विवेदी	13
• राजनीतिक दर्शन में एम. एन. रॉय का योगदान	ज्योति देवल	17
• मानिनी प्रमुख अभिनेत्री की प्रामाणी भाषाओं के संदर्भ साहित्य में महत्वता	मनीष जैन	20
• पंचवर्षीय योजनाओं में महिला शिक्षा के विकास हेतु प्रावधान	सुकीर्ति	24
• मनोहर श्यामल के काव्य में पहाड़ी लोकजीवन	मधुमति शर्मा	28
• अनुराग मीसम : जीवन और साहित्य	डॉ० महेश 'दिवाकर'	31
	मधु	
• विकास प्रशासन की चुनौतियाँ तथा उपलब्धियाँ : एक समीक्षात्मक अध्ययन	सुमन कुमार	35
• सामाजिक स्वतंत्रता के संरक्षण में जीवाश्मित वादों का सकारात्मक प्रभाव	प्रकाश कुमार	39
• सावनगढ़ की जरदोजी कला : वर्तमान में जरदोज (कारीगर) की आर्थिक दशा के विशेष सन्दर्भ में	शालिनी सिंह	44
• पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता	रवीन्द्र कुमारी	48
• संस्कृत नाट्य में वृत्ति एवं प्रवृत्ति की भूमिका	अनिता आर्या	52
• संस्कृत काव्यशास्त्र एवं काव्यशिक्षा (जैनाचार्यों के विशेष सन्दर्भ में)	पूजा अग्रवाल	55
• भारत में कला एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु विधिक प्रावधान	सुरेश चन्द्र कान्डपाल	59
• जनजातीय विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका का विश्लेषण	जसवन्त मोहन सिंह नेगी	64
• विनोद बिहारी मुखर्जी का कलात्मक योगदान	दीपक चन्द	69
• उपन्यास विधा और मनोविज्ञान का अंतर्सम्बन्ध	मृणालिनी पाठक	72
• आत्मोन्नति के एक सशक्त माध्यम के रूप में 'योग' की परम्परा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनभागीदारी का प्रयास	डॉ० सुभाष मिश्र	75
• मिजोरम में हिन्दी : विकास और उन्नयन	डॉ० रोहतुपुई	79
	प्रो. सुशील कुमार शर्मा	
• नन्दकिशोर नवल की कथालोचना	अमर कुमार चौधरी	84
• मिजो लोक कथाओं में मानव-मूल्य	रिबेका लालहमबाइ	88
	प्रो. सुशील कुमार शर्मा	
• भारत में दूरदर्शन की अभियांत्रिकी यात्रा : जन्म से आज तक	आलोक सक्सेना	91
• शमाशाणी पर्व : एक विश्लेषण	डॉ० आराधना	95
	अंशु	
• ब्रज संस्कृति की समरसता-वैश्विक परिप्रेक्ष्य	डॉ० सुनीति एस. आचार्य	99
• 'इज्जत' कहानी : समीक्षा और संवेदना शिल्प	डॉ० पंकज सिंह	101
	मनीष माधव	
• लिटन से पूर्व आँग्ल-अफगान सम्बन्ध	विजय कुमार	105
• पहाड़ी कोरवा जनजातियों में स्थानीय – स्वशासन के प्रति जागरूकता का सामान्य अध्ययन	डॉ० जसिन्ता मिन्ज	108

SHOT ON REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

महाकवि अनुराग गौतम महाकाव्य के 'चाँदनी' में चिंतन के विविध स्वर

ऋतु, शोध छात्रा, हिंदी
डॉ॰ महेश 'दिवाकर', शोध निदेशक
श्री वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला (उ॰प्र॰)

महाकवि श्री अनुराग गौतम बहुआयामी कृतित्व के रचनाकार हैं, जिनके व्यक्तित्व में गीतकार, गद्य गीतकार, गजलकार और कहानीकार का विशिष्ट रचनाकार आत्मसात है। उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ की बिल्सी तहसील के छिवऊ खुर्द गाँव में 30 जून, 1933 ईसवी में जन्मे और 17 अगस्त सन् 2017 को मुरादाबाद में दिवंगत महाकवि श्री 'अनुराग' की महाकाव्य कृति 'चाँदनी' मेरी दृष्टि से काव्य और शिल्प के क्षेत्र में कालजयी महाकाव्य 'कामायनी' की ही तरह आप्रतिम और प्रशंसनीय रचना है।

'चाँदनी' महाकाव्य के प्रणेता स्व॰ ब्रजभूषणसिंह गौतम 'अनुराग' ने 'अनुभूति' शीर्षक से लिखी भूमिका में अपनी रचना का उद्देश्य इस प्रकार व्यक्त किया है–'इस देवभूमि, आलोक भूमि में, आस्था की धधकती हुई आग से पवित्रता, उदारता, संयम, सज्जनता, नीति-निष्ठा और सामूहिकता जैसे सद्गुण जगमगाते रहते थे। आज इसी भूमि में अनीति, अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और अलगाववाद आदि तत्त्वों का बोलबाला है, वैभव- विलासिता और उच्छृंखलता का प्रदर्शन है। छल-छद्म और स्वार्थपरता को वीभत्स दृश्य दृष्टिगत हैं। सौंदर्य आत्मा की प्यास है। संसार की प्रमुख संपदा प्यार है। अंतरात्मा में प्रकाश उत्पन्न करने वाला तत्त्व प्यार है। अत: स्नेह सद्भाव की, प्रेम और ममता की मधुरिमा का महत्त्व उभारा जाए। उसकी गरिमा को वितरित किया जाए। मैंने विश्व-विभीषिकाओं के विनाश एवं धरती पर पुन: स्वर्ग जैसा वातावरण उत्पन्न करनेवाले देव-मानवों का सृजन, साहित्य के माध्यम से करने का साहसिक प्रयास करने का मन बनाया। मुझे चंद्रमा में ऐसा ही दिखाई पड़ा। अत: चाँदनी का मानवीकरण करने, उसे लोक-सेविका के रूप में इस धरती पर उतार लाने का पावन विचार मुझे सुखानुभति देने लगा?'[1]

महाकवि 'अनुराग' की दिव्य 'अनुभूति' का साक्ष्य इस कृति के 'आमुख' में विद्वान श्री पुष्पेंद्र वर्णवाल ने अपने इन शब्दों में दिया है–'प्रकृति एक अचेतन तत्त्व है। पुरुष का स्पर्श पाकर वह चैतन्यावस्था को प्राप्त होती है और सृष्टि में लोकमंगल का कारण बनती है। प्रकृति का एक पक्ष 'चाँदनी' है। 'चाँदनी' एक संज्ञा नाम है, नारी व्यक्तित्व है, जो चंद्रमा के स्पर्श से विश्व-धरातल पर संचरण करती है और लोकसेविका स्वरूप को प्राप्त होती है। सामाजिक जीवन में पुरुष की प्रतिष्ठा भी नारी के योग से मानी जाती है। नारी का लोकसेविका स्वरूप मार्गलिक पक्ष से आर्यपुरुष को प्रतिष्ठित करता रहा है। 'चाँदनी' प्रबंधकाव्य का कथातत्त्व इसी सूत्र के चारों

 ISSN 0975-735X

ओर विकसित हुआ है।'[2]

महाकवि 'अनुराग' गौतम जी ने अपने इस महाकाव्य 'चाँदनी' में अभूतपूर्व उद्‌भावना के माध्यम से लोकजीवन में मंगल एवं संतोष के चिर प्रतीक चंद्रमा की चिरप्रेयसी 'चाँदनी' को लोकसेविका के रूप में अपनी काव्य-नायिका बनाया है।

'चाँदनी' अपने प्रिय चंद्रमा के हार्दिक अनुरोध पर आकाश से धरती पर अवतरित होकर विश्वकल्याण की अनूठी कामना लेकर विश्वभ्रमण करती है और अंततः द्वारिका नगरी में पहुँचकर विश्वकल्याण का अपना महत्तम लक्ष्य पूर्ण करती है। इस अप्रितम विचार-दर्शन को आधार बनाकर 'चाँदनी' महाकाव्य को कवि ने सोलह कलाओं में विन्यास करके रचा है। महाकाव्य की अंतिम षोडश कला वस्तुतः चंद्रमा की अंतिम कला अर्थात् 'पूर्णिमा' ही है, जिसमें महाकवि का चिंतन अनुस्यूत है।

मैंने महाकवि स्व॰ ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग' के चिंतन को वस्तुतः 'इंद्रधनुषी-चिंतन' के रूप में देखा हैं [3]–1. दर्शन चिंतन, 2. भक्ति चिंतन, 3. त्रितत्व चिंतम, 4. लोकचिंतन, 5. सनातन चिंतन, 6. वैश्विक चिंतन, 7. संकल्प चिंतन

1. **दर्शन चिंतन**

महाकाव्य 'चाँदनी' में कविवर स्व॰ 'अनुराग' गौतम ने भारतीय धर्म एवं दर्शन को अत्यंत भव्य एवं प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्ति दी है। लोकसेविका के रूप में विश्व-भ्रमण कर लेने के बाद जब चाँदनी अंततः 'द्वारिका नगरी' में आकर द्वारिकाधीश के भव्य भवन पर रुक जाती है, तो महाकवि 'अनुराग' मानो अनायास दार्शनिकचिंतन की अभिव्यक्ति का सुअवसर पा जाते हैं। 'चाँदनी' महाकाव्य की सोलहवीं कला इस दृष्टि से जहाँ काव्य-सौंदर्य से अभिमंडित हो गई है, वहीं भारतीय दर्शन-परंपरा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति महाकवि ने की है।

'चाँदनी' महाकाव्य में 'द्वारिका नगरी' का रूपक दर्शनीय है–

यह द्वारिका ब्रह्म नगरी है, आठ चक्र, नौ द्वार लिए।
यही अयोध्या कहलाती है, कांत कोष आधार लिए।[4]

महाकवि स्व॰ 'अनुराग' ने अथर्व संहिता, कांड-10, सूक्त-2-2699 में आए उल्लेख के अनुसार 'आठ-चक्र' अर्थात् मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, लोलकर एवं तालमूल चक्र के साथ नौ द्वारों अर्थात् दो नेत्र, दो नासिका-छिद्र, दो कान, एक मुख तथा दो मलद्वार सहित 'मानव-देह' को ही 'द्वारिका नगरी' का रूपक देकर 'अयोध्या' माना है। 'चाँदनी' का ऐसा भव्य रूपक देखकर अनायास महाकवि जयशंकर प्रसाद प्रणीत 'कामायनी' का स्मरण हो आता है। द्वारिका नगरी के आठ चक्रों तथा नौ द्वारों का उल्लेख करके कवि स्पष्ट करता है–

यह ब्रह्मांड शरीर मनुज का, इस नगरी के सम ठहरे।
इनके उपलक्षण मिलते हैं, आपस में अतिक्षय गहरे।[5]

इसी द्वारिका नगरी के रूपक में कवि ने वैदिक योग एवं दर्शन का अनूठा चिंतन काव्य के माध्यम से अत्यंत सहज रूप में व्यक्त कर दिया है। इस देह रूपी द्वारिका का स्वरूप बताकर कवि कहता है–

दिव्य आत्मा देह-गुफा में, इस संसृति में रहती है
प्राणयुक्त गतिशील प्रयासी है, यह दुनिया कहती है।[6]

निःसंदेह, द्वारिका नगरी के इस अत्यंत सटीक एवं भव्य रूपक के माध्यम से महाकवि

'अनुराग' गौतम ने दर्शन-चिंतन को भव्य रूप में प्रामाणिक अभिव्यक्ति दी है।

वस्तुत: 'चाँदनी' महाकाव्य उत्कृष्ट चिंतन का काव्य है। दर्शन-चिंतन के अंतर्गत कविवर श्री 'अनुराग' ने आत्मबोध, जगत-बोध, ब्रह्म एवं माया आदि के विषय में प्रामाणिक रूप से इस प्रकार लिखा है कि सहृदय विज्ञ पाठक चमत्कृत हो उठता है। 'आत्मतत्त्व' के संदर्भ में 'चाँदनी' का रचनाकार कहता है–

आत्म-तत्त्व ईश्वर का संगम, करे क्रिया तो योग रहे।
विमुख योग से करे प्राण को, वही कर्म तो भोग रहे।[7]

यह तत्त्व-चिंतन 'कामायनी' का सहसा स्मरण करा देता है। 'ब्रह्म' के चिंतन को आधारशिला बनाकर कवि प्रेरक कल्याण का मार्ग दिखा देता है, तो लगता है कि 'चाँदनी' वस्तुत: सार्थक काव्य बन गया है–

परमब्रह्म के हम सब पुतले, वह सबसे ही प्यार करे।
एक वंश, परिवार हमारा, वह समान व्यवहार करे।[8]

फलत: कवि का यही अमृत दर्शन चिंतन इस महाकाव्य 'चाँदनी' की उदात्त चिंतन धारा को अज्ञेय बना देता है–

तुम शरीर और जीव नहीं, कब मरणशील हो, आत्मा हो।
पहचानो महानता अपनी, तुम सचमुच परमात्मा हो।[9]

नि:संदेह, महाकवि 'अनुराग' गौतम ने दिव्य 'चाँदनी' के माध्यम से भारतीय दर्शन की गूढ़, गंभीर चिंतनधारा को सहज रूप से मार्मिक अभिव्यक्ति देकर अपनी काव्यकृति को कालजयी बना दिया है। कवि के दर्शन-चिंतन की बोधगम्यता पाठक को बाँध लेती है, यह सत्य 'चाँदनी' की ये पक्तियाँ आपको बता रही हैं–

विगत गर्भ में छिपा अदृश जो, वही गया, अध्यात्म कहा।
सत्य, प्रेम, करुणा, उदारता ही सचमुच परमात्म रहा।[10]

मेरी विनम्र दृष्टि में महाकवि बृजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग' प्रणीत 'चाँदनी' के दर्शन-चिंतन की भव्यता का मूलाधार वस्तुत: भारतीय चिंतनधारा का प्राण 'लोककल्याण की चेतना' ही रही है।

2. **भक्ति-चिंतन**

महाकाव्य 'चाँदनी' की चिंतन-धारा में कवि ने भक्ति-चिंतन को प्रमुखता दी है। वस्तुत भक्ति मानव-मन का ऐसा भाव है, जिसमें 'अहं' का तिरोभाव होकर 'समर्पण' की प्रमुखता हो जाती है। महाकवि अनुराग' गौतम ने लोककल्याणकारिणी, चंद्रप्रिया 'चाँदनी' से ही भक्ति के विषय में कहलाया है–

ज्ञान, कर्म अरु उपासना में, है उपासना ज्येष्ठ रही।
सभी साधनों में सचमुच ही, शुद्ध भक्ति ही श्रेष्ठ रही।

भक्ति प्रेम का शुद्ध रूप है? है जिसका फल जगत-सृजन।
यह समरसता की उद्घोषक, विभु का सर्वोत्तम अर्चन।।[1]

नि:संदेह, 'चाँदनी' महाकाव्य के कवि का यह 'भक्ति-चिंतन', भारतीय धर्मशास्त्रियों, मनीषियों तथा चिंतकों की विचारणा का अमृत-सार ही है। कवि के शब्दों में 'घृणा मनुज से, प्रेम ईश से, कहलाता है प्रेम नहीं' में विश्व के सभी धर्मों का सार-तत्त्व निहित मिलता है, तो दूसरी

ओर, कवि भक्ति को 'प्रेम' का शुद्ध रूप कहकर, जब भक्ति को सर्वोपरि महत्त्व देकर 'समरसता' की 'उद्घोषणा' कहते हुए 'विभु का सर्वोत्तम अर्चन' मान लेता है, तो जैसे भक्ति-तत्व का अमृत ही दे देता है।

भक्ति तो मानव-मन के सारे कलुष और पाप-भाव को सहज ही नष्ट कर देती है। इसी भाव को 'चाँदनी' का कवि यूँ कहता है–

दंभ और हिंसा की सोचें, फिर भी हरि से प्रेम करें।
वे नर तामस भक्त कहाते, अपना ही हैं क्षेम करें।[12]

अंततः कवि सात्त्विक भक्ति का महत्त्व लोकसेविका 'चाँदनी' से इस जगत को कहलाकर, अपने भक्ति-चिंतन का तत्त्व देता है–

पूजन को कर्तव्य समझ, जो जन प्रभु को अर्पित होते।
सात्त्विक भक्त वही कहलाते, जीवन में सत् चित्त होते।[13]

3. **त्रितत्त्व-चिंतन**

महाकवि जयशंकर प्रसाद प्रणीत महाकाव्य कृति 'कामायनी' का प्राण-तत्त्व है 'त्रितत्त्व-दर्शन', जिसमें 'इच्छा, क्रिया एवं ज्ञान' के एकतत्व को ही 'समरसता' एवं 'आनंद' का मूल कहा गया है। 'चाँदनी' महाकाव्य की नायिका बनाई गई, लोकसेविका एवं चंद्रप्रिया 'चाँदनी' के माध्यम से महाकवि 'अनुराग' गौतम ने भी त्रितत्त्व का कई रूपों में चित्रण करके भारतीय चिंतन धारा में सहृदय पाठकों को अवगाहन करने का सुअवसर प्रदान किया है। यथा 'कामायनी' के दर्शन का स्मरण कराती 'चाँदनी' कहती है–

इच्छा-कर्म, ज्ञान साधन हैं, सत साधन, सत् साध्य मिले।
त्रयक बिंदुओं का हो संगम, प्राणों को आराध्य मिलें।[14]

महाकवि प्रसाद कहते हैं–'ज्ञान दूर, कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की' और 'चाँदनी' का कवि कहता है–'त्रयक बिंदुओं का हो संगम, प्राणों को आराध्य मिले।' सचमुच गजब का चिंतन है यह।

4. **लोक-चिंतन**

महाकाव्य 'चाँदनी' का मूल कथ्य ही वस्तुतः कविवर 'अनुराग' ने लोकमंगल एवं लोककल्याण माना है। 'आमुख' में इसी तथ्य को समीक्षक श्री पुष्पेंद्र वर्णवाल ने स्वीकार भी किया है–'कवि ने चाँदनी के धरती पर अवतरण और विचलन में उसकी युगीन भावना दृष्टि में निहित लोकसेविका की छवि को प्रबंधकाव्य रूपक का आश्रय लेकर प्रबंध-योजना से प्रस्तुत किया है। हिंदी साहित्य के विस्तृत समुद्र में यह नवीन कृति एक सर्वथा नवीन उद्भावना के साथ मौलिक प्रयास है।'[15]

यही तो है 'वसुधैव कुटुंबकम्' का लोकचिंतन, जो 'चाँदनी' महाकाव्य के उक्त छंद में निहित है। कवि 'सुरभित प्रज्ञा' का 'किरण जाल' अपने लिए नहीं चाहता, प्रत्युत उसका लोकचिंतन तो 'सकल भुवन में फिर निखरे' की महनीय कामना करता है। कवि अपनी इस मंगल लोकभावना की संपूर्ति के लिए चाहता है–'मिटे प्रदूषण भावों का ताकि 'जग में चिन्मय सौरभ बिखरे' कवि का लोकचिंतन निश्चय ही उदात्त और महानीय बन गया है–

नग्न चेतना को पहिनाएँ, फूलों के परिधान नए।
भूखी गौरैया को दें, रोटी-कन मधुर सुवास लिए।[16]

5. **सनातन चिंतन**

काव्य वस्तुत: शाश्वत् जीवनमूल्यों की गुण-सापेक्ष व्याख्या करता आया है। यही कारण है कि कवि अपने काव्य में जहाँ वर्तमान को चित्रित करता है, वहीं अतीत के जीवनानुभवों के आधार पर भावी समाज की कल्पना भी करता है। काव्य इसीलिए परंपरा और आधुनिकता के साथ-साथ आदर्श एवं यथार्थ को भी लेकर चलता है। 'प्रेम' जीवन का सनातन सत्य है। समाज की प्रगति का मूलाधार है। कविवर 'अनुराग' गौतम इसी सनातन चिंतन को वाणी देते हैं–

विश्व रूप है इष्टदेव का, भक्त सदा विश्वास करे।
इसी भाव से प्रेम लुटाता, यही मोक्ष है आस करे।[17]

6. **वैश्विक चिंतन**

कवि अपनी उदात्त कल्पना के विस्तृत आकाश में विचरण करते हुए, व्यक्ति को भूलकर, केवल समष्टि-कल्याण की ही कामना करता है। कवि का यही गुण तो उसे 'लोकोत्तर' आनंद की सृष्टि करने की अपार शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करता आया है।

'चाँदनी' महाकाव्य में कवि चंद्र-प्रिया, ज्योत्सना, रश्मियों के सागर को संसृति-कल्याण के लिए लुटानेवाली, ऐश्वर्यशालिनी 'चाँदनी' को ही 'लोकसेविका' बनाकर अपने वैश्विक चिंतन को भव्य अभिव्यक्ति देता है। कवि का चिंतन उदात्त भाव जगाता है–

हम दिव्यत्वपूर्ण जीवन का, आओ तो नव सृजन करें।
ईश्वर रूप सृष्टि संबर्धनहित, हिलमिल कर यत्न करें।[18]

7. **संकल्प-चिंतन**

तत्त्वत: संकल्प चेतना ही महाकाव्य की प्राण-शक्ति बनती है। महाकवि ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग' द्वारा रचित महाकाव्य 'चाँदनी' का प्राणतत्त्व भी वस्तुत: संकल्प-चेतना ही है। लोककल्याण ही कवि का वह सर्वोच्च संकल्प है, जिसे अपना जीवन-लक्ष्य बनाकर कथा नायिका 'चाँदनी' विश्व-भ्रमण करती है। अनूठी उद्‌भावना की आधारभूमि पर प्रणीत इस महाकाव्य 'चाँदनी' में कवि की संकल्प-चेतना का संकेत स्वयं कवि द्वारा लिखित काव्य-भूमिका 'अनुभूति' के इन शब्दों में सहज ही मिल जाता है–'अत: 'चाँदनी' प्रबंधकाव्य के सृजन में मेरा प्रमुख उद्देश्य, अध्यात्म की राष्ट्रीय और वैश्विक चेतना को आलोकित आंदोलित करना एवं पारस, कल्पवृक्ष, अमृत, कामधेनु जैसे मानव के जीवन की हृदयस्पर्शी भाव-चेतना को झकझोरता रहा है।[19]

निश्चय ही, महाकाव्य 'चाँदनी' के कवि का यह महत्तर संकल्प-चिंतन वर्तमान के भटकाव, दुराव और पीड़ाओं से विश्व-समाज को मुक्ति दिलाने की राह दिखाने में समर्थ है कविवर श्री 'अनुराग' का संकल्प-चिंतन ही तो है।

जीवन सरल विचार उच्च हों, विश्व-बंधुता लक्ष्य रहे।
समरसता की विजय पताका, फहराये यह सत्य रहे।
खुल जाएँ स्थामल रहस्य वे, दमित मानवी जीवन के।
ज्योतिधार प्रज्ञा की फूटे, पावन हों मन जन-जन के।[20]

अस्तु 'चाँदनी' महाकाव्य के रचयिता का यह उदात्त चिंतन वरणीय, महनीय एवं वंदनीय हैं। कविवर 'अनुराग' गौतम का संकल्प-चिंतन मूलत: भारतीय प्रज्ञा का अमृत चिंतन ही है, जो 'चाँदनी' महाकाव्य को अमर बना देगा।

अंत में, कवि 'अनुराग' गौतम प्रणीत 'चाँदनी' महाकाव्य के चिंतन का सारतत्त्व, उन्हीं के

शब्दों में देकर मैं दृढ़तापूर्वक कहना चाहूँगी कि 'चाँदनी' का उदात्त-चिंतन युग-चिंतन ही है–

प्रातिभ प्राणवान आत्माओं, तुम विभूति हो प्रभुवर की।
भर लो मनोभूमि में शुचिता, है अभिलाषा नटवर की।
विश्व-मंच पर बढ़ो मानवो, प्रज्ञा की हुंकार भरो!
विकसित करो दृष्टियाँ अपनी, मानवीय अधिकार बरो।[21]

संदर्भ

1. 'चाँदनी' (अनुभूति), पृ॰ 4-6
2. चाँदनी (आमुख श्री पुष्पेन्द्र वर्णवाल), पृ॰ 10
3. सं॰ डॉ॰ महेश 'दिवाकर', अनुराग गौतम : अमृत महोत्सव अभिनंदन-ग्रंथ, पृ॰ 204
4. 'चाँदनी', महाकाव्य, पृ॰ 392
5. वही, पृ॰ 392
6. वही, पृ॰ 394
7. वही, पृ॰ 382
8. वही, पृ॰ 383
9. वही, पृ॰ 395
10. वही, पृ॰ 396
11. वही, पृ॰ 400
12. वही, पृ॰ 403
13. वही, पृ॰ 403
14. वही, पृ॰ 382
15. वही, पृ॰ 11
16. वही, पृ॰ 389
17. वही, पृ॰ 391
18. वही, पृ॰ 423
19. वही, पृ॰ 7
20. वही, पृ॰ 387
21. वही, पृ॰ 431

कांभोपुरा
पो॰ मधुवन (करनाल) हरियाणा
मो॰ 9992210003

GOVT. OF INDIA - RNI No. UPBIL/2014/56766
UGC APPROVED JOURNAL NO.. - 48836

ISSN-2348-2397

★ Vol. 4 ★ Issue 14 (2) ★ April to June 2018

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

SHODH SARITA

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPILANARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D.Litt. - Gold Medalist

Published by
SANCHAR EDUCATIONAL & RESEARCH FOUNDATION LUCKNOW. U.P. (INDIA)
Website : http://www.seresearchfoundation.in
http://www.seresearchfoundation.in/shodhsarita

GOVT. OF INDIA - RNI No. UPBIL/2014/56766 ISSN No. 2348-2397
UGC APPROVED JOURNAL NO.. - 48836

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPILANARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

शोध सरिता

* Vol. 4 * Issue 14 (2) * April - June, 2018

संपादक मण्डल

डॉ. विनय कुमार पाठक
अध्यक्ष–छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. एम. पी. शर्मा
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. अब्दुल अलीम
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. सुधीर प्रताप सिंह
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्लर

डॉ. महेश 'दिवाकर'
अध्यक्ष–अंतरराष्ट्रीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद

डॉ. जय शंकर बाबू
पाण्डिच्चेरी विश्वविद्यालय, पाण्डिच्चेरी

डॉ. एम0 एल0 यादव
राजकीय महाविद्यालय, बुलन्दशहर

डॉ. प्रणव शास्त्री
उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत

डॉ. नीरज शुक्ला
ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फारसी, विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा
के. एम. राजकीय पी.जी. कॉलेज, गौतम बुद्ध नगर

डॉ. एस. चैल्लै
मदुरई कामराज, विश्वविद्यालय, मदुरई

डॉ. आशीष श्रीवास्तव
विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन पश्चिम बंगाल

प्रधान संपादक
डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ0प्र0), भारत द्वारा प्रकाशित

अनुक्रमणिका / Contents

- शचीन्द्र भटनागर : जीवन और साहित्य — डॉ0 महेश 'दिवाकर', स्वाति रस्तोगी — 1
- भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी भाषा तथा साहित्य — प्रो0 सुशील कुमार शर्मा — 6
- भारत विभाजन और अज्ञेय की कहानियाँ — डॉ0 इन्दू कनौजिया — 10
- ई–लेखन और उसकी महत्वपूर्ण विधा ब्लॉग — डॉ0 एस0पी0 द्विवेदी — 13
- राजनीतिक दर्शन में एम. एन. रॉय का योगदान — ज्योति देवल — 17
- गणिनी प्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के स्तोत्र साहित्य में महाव्रत — शशि जैन — 20
- पंचवर्षीय योजनाओं में महिला शिक्षा के विकास हेतु प्रावधान — सुवाति — 24
- मंगलेश डबराल के काव्य में पहाड़ी लोकजीवन — यदुमति शर्मा — 28
- अनुराग गौतम : जीवन और साहित्य — ऋतु — 31
- विकास प्रशासन की चुनौतियाँ तथा उपलब्धियाँ : एक समीक्षात्मक अध्ययन — शुभम कुमार — 35
- वैयक्तिक स्वतंत्रता के संरक्षण में लोकहित वादों का सकारात्मक प्रभाव — प्रशान्त कुमार — 39
- लखनऊ की जरदोजी कला : वर्तमान में ज़रदोज़ (कारीगर) की आर्थिक दशा के विशेष सन्दर्भ में — शालिनी सिंह — 44
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सार्थकता — रश्मि कुमारी — 48
- संस्कृत नाट्य में वृत्ति एवं प्रवृत्ति की भूमिका — नन्दिता आर्या — 52
- संस्कृत काव्यशास्त्र एवं काव्यशिक्षा (जैनाचार्यों के विशेष सन्दर्भ में) — पूजा अग्रवाल — 55
- भारत में कला एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु विधिक प्रावधान — सुरेश चन्द्र काण्डपाल — 59
- जनजातीय विकास में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका का विश्लेषण — उत्तम मोहन सिंह मीणा — 64
- विनोद बिहारी मुखर्जी का कलात्मक योगदान — दीपक चन्द — 69
- उपन्यास विधा और मनोविज्ञान का अंतर्सम्बन्ध — मृणालिनी पारीक — 72
- आत्मोन्नति के एक सशक्त माध्यम के रूप में "योग'' की परम्परा एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनभागीदारी का प्रयास — डॉ0 सुभाष मिश्र — 75
- मिजोरम में हिन्दी : विकास और उन्नयन — कैथी रौह्लुपुई, प्रो. सुशील कुमार शर्मा — 79
- नन्दकिशोर नवल की कथालोचना — अमर कुमार चौधरी — 84
- मिज़ो लोक कथाओं में मानव–मूल्य — रिबेका ललह्मङाइ, प्रो. सुशील कुमार शर्मा — 88
- भारत में दूरदर्शन की अभियांत्रिकी यात्रा : जन्म से आज तक — आलोक सक्सेना — 91
- क्षमावाणी पर्व : एक विश्लेषण — प्रो0 आराधना अंशु — 95
- ब्रज संस्कृति की समरसता–वैश्विक परिप्रेक्ष्य — डॉ0 सुनीति एस. आचार्य — 99
- 'इज़्ज़त' कहानी : समीक्षा और संवेदना शिल्प — डॉ0 पंकज सिंह, संवित माधव — 101
- लिटन से पूर्व ऑग्ल–अफगान सम्बन्ध — विजय कुमार — 105
- पहाड़ी कोरवा जनजातियों में स्थानीय – स्वशासन के प्रति जागरूकता का सामान्य अध्ययन् — डॉ0 जसिन्ता मिन्ज — 108

- रमणिका गुप्ता की कविताओं का विश्लेषण एवं मूल्यांकन — डॉ0 देवेन्द्र प्रसाद सिंह, अनिल कुमार — 112
- गरीब महिला की ज्वलंत समस्या — डॉ0 बिन्दु कनौजिया — 115
- कामतानाथ के उपन्यास 'पिघलेगी बर्फ' में अभिशप्त तिब्बत की सामाजिक चेतना — डॉ0 पंकज सिंह, यमुना प्रसाद — 117
- चंदायन एवं पद्मावत में नायक नायिका भेद एवं प्रेम सौन्दर्य का निरूपण — डॉ0 देवेन्द्र प्रसाद सिंह, तारा कुमारी — 120
- धर्मशास्त्रे वर्णिताः विवाहः, विवाहभेदाश्च — पुनित शर्मा — 124
- बाल श्रमिकों का सामाजिक सच — अनिता कुमारी — 127
- बाल अधिकार संरक्षण एवं भारतीय समाज की समस्याएं : एक समीक्षात्मक अध्ययन — श्रीमती शबनम कुमारी — 130
- संसदीय चर्चाएं, नेता प्रतिपक्ष और हिन्दी में राजनैतिक संचार — डॉ0 विवेक शर्मा — 134
- Sustainable Development Goals : New Initiative To Achieve Good Governance In India's Perspective — Dr. Archana Thakur — 137
- E-Governance : Reforming government through technology — Dr. Arun Kumar Mishra, Dr. Ajay Shukla — 144
- Achieving The Ends Of Justice Through Compensatory Discrimination — Dr. Archana Mishra — 148
- Building Sustainable Livelihood of the poor through mnrega — Dr. Sonia Deval — 152
- Managerial aptitude of srimanta sankaradeva — Minakshi Ghosh — 156
- Consumer attitude towards cashless economy — Dr. Ajay Shukla, Sonal Khanna — 160
- Digital Natives — Dr. B. Anirudhan, Dr. Shobhana Kokkadan — 165
- Marginalized Section In Indian Society And Human Rights-a Study — Dr. Vijay Kumar — 168
- Role Of Education In Creating Social Change — Pallavee Kumari — 173

ISSN - 2348-2397
UGC Approved, Journal No. 48836

SHODH SARITA
Vol. 4, Issue 14 (2), April-June, 2018
Page Nos. 31-34

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

अनुराग गौतम : जीवन और साहित्य

❒ ऋतु*
डॉ0 महेश 'दिवाकर'**

शोध सारांश

स्व॰ ब्रजभूषण सिंह गौतम, जिन्हें साहित्य के क्षेत्र में 'अनुराग गौतम' के नाम से जाना जाता है, का जन्म 30 जून, सन् 1933 को उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ के 'छिबऊ खुई' में हुआ था। आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की और बिक्रीकर विभाग, उत्तर प्रदेश में जीविका प्राप्त की तथा जीवन–पर्यन्त साहित्य के प्रति, न केवल समर्पित रहे, अपितु अनेकशः कृतियों का सृजन भी किया। वे महाकवि थे और 'दरपर मेरे गाँव का' तथा 'चाँदनी' महाकाव्यों की रचना करके महाकवि की भूमिका को वरण किया। कविता, नयी कविता, गीत, दोहा, गजल, मुक्तक, समीक्षा, निबन्ध, कहानी आदि के रूप में हिन्दी के लिए अनेकशः महत्वपूर्ण कृतियाँ दीं। **'आँसू', 'सोनजूही की गन्ध', 'आँगन में सोनपरी', 'हरी दूब का दर्द', 'समर्पण', 'मनुहार', 'साँसों की समाधि', 'अनुराग दोहावली', 'एक टुकड़ा आसमान'** आदि उनकी बहुचर्चित एवं महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। वे जीवन पर्यन्त भारतीय संस्कृति के लिए समर्पित रहे। भावपक्ष और कला–पक्ष दोनों ही दृष्टि से उनका काव्य हिन्दी साहित्य की महान धरोहर है। अन्ततः 17 अगस्त, सन् 2017 को स्वर्गवासी हो गये।

रचनाकारों की सृष्टि बड़ी अजीब है। समाज के बीच में रहते हैं, दुःख–सुख की अनुभूति भी उन्हें अन्य जनों की भाँति होती है जिसकी संवेदना उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। सृष्टि–समाज के अन्य प्राणी केवल स्वयं में ही खोये रहते हैं जबकि रचनाकार समाज, राष्ट्र और विश्व की प्रत्येक घटना पर पैनी दृष्टि रखता है और अपने अनुभव का रस उसमें मिलाकर उसे रसात्मक बना देता है। इन्हीं अर्थों में साहित्यकार विलक्षण होता है। वह न केवल अपने वर्तमान के प्रति सचेत रहता है अपितु अपने इतिहास और स्वाभिमानी परम्परा के प्रति भी दायित्व निभाता है। समाज के उत्कर्ष एवं उदात्त स्वरूप को वह इतिहास और साहित्य के रूप में चिरस्मरणीय बना देता है। साहित्यकार की सोच निरन्तर चारू से चारूतर, स्थूल से सूक्ष्म और लेष से विषद एवं व्यापक होती जाती है। अन्ततः वह समग्र विश्व के कल्याण अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से ओतप्रोत होता जाता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए साहित्यकार से इतर व्यक्ति जब मर जाता है तो सदैव को ही मिट जाता है, लेकिन साहित्यकार कभी नहीं मरता। उसकी कृतियाँ, उसका साहित्य युगों–युगों तक उसे अमर रखता है यथा आदि कवि वाल्मीकि से लेकर आज तक साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समग्र सृष्टि में जीवित है, अमर है।[1]

क्विवर ब्रजभूषण सिंह गौतम, जिन्हें 'अनुराग' गौतम के नाम से जाना जाता है, इसी आदर्शवादी संचेतना के साहित्यकार हैं, जिनकी जन्मस्थली तो उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक जनपद बदायूँ का एक गाँव है, लेकिन आजीविका स्थली मुरादाबाद की सांस्कृतिक नगरी है, तो साहित्य–कर्मस्थली मुरादाबाद जनपद की सीमाओं को लांघकर न केवल समग्र भारतवर्ष बन चुकी है, अपितु विश्व क्षितिज को भी स्पर्श कर चुकी है।[2]

पूछो मत तुम मेरा परिचय
सब कुछ अपने आप जान लो।[3]

ये पक्तियाँ हैं, कविवर **ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग'** की, जो उनकी प्रथम गीति रचना 'आँसू' से उद्धृत हैं। ये गीति–पंक्तियाँ हमें कवि के मन्तव्य को स्पष्टतः दर्शाती हैं कि कवि का यदि परिचय जानना चाहते हो तो आप उनसे मत जानो, और यदि जानना चाहते हो तो उसके साहित्य से उसे पहचानो। निस्सन्देह स्वयं कवि की ये पंक्तियाँ उनपर सटीक बैठती हैं।

30 जून, 1933 को **अनुराग गौतम** का जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद बदायूँ के ग्राम **छिबऊ खुर्द** में हुआ। श्री 'अनुराग गौतम' का वास्तविक नाम **'ब्रज भूषण सिंह गौतम'** है। **'अनुराग गौतम'** आपका साहित्यिक नाम है।

इनके पिता का नाम स्व0 सरदार सिंह गौतम और माता का नाम स्व. पुष्पलता गौतम के परिवार में जन्मे कविवर 'अनुराग गौतम' ने बचपन से लेकर किशोरावस्था तक गाँव की सुवासित,

*शोधार्थी – वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उ0प्र0)
**शोध निर्देशक – वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा (उ0प्र0)

बछुआ, पुरवइया और वसन्ती हवाओं का आनन्द लिया। गाँव की मनोरम, मदमस्त, शीतल अमराइयों में कोयल की कूकती मिठास और पपीहा की 'पी–पी' तथा कागा की प्रातः की काँव–काँव ने उनके जीवन के बाल्यकाल को न केवल सजाया–सँवारा, अपितु खेतों में दूर–दूर तक फैली शस्य–श्यामला ने उनके मन में ताजगी, स्फूर्ति और नयी सोच का प्रादुर्भाव किया। बैलों के घुंघरुओं की रुनझुन और चिड़ियों की कलरव ने उन्हें संगीतात्मकता से आप्यायित किया तो गाय –भैंसों के रम्भाने और बछड़ों की उछल–कूद ने उन्हें एक अनूठा अपनत्व एवं चांचल्य दिया। ऋतुओं की प्रातः की शीतल एवं सुहानी वायु और संध्या की गौधूलि ने उनके हृदय में समरसता एवं समन्वय की भावना उत्पन्न की।

बालकों की किलकारियों और निश्छल निर्द्वन्द्व नैत्यिक क्रीड़ाओं ने उन्हें अल्हड़ता और स्निग्धता दी। गली–मुहल्ला, गाँव की सामूहिकता ने उन्हें परस्पर प्रेम व एकता के सूत्र में पिरोया। गाँव के दुरूह एवं निरालस जीवन ने उन्हें कर्मठ भी बनाया। निस्सन्देह इसी प्राकृतिक एवं मनोहारी वातावरण और मात–पिता के लोक भावन संस्कारों ने उनमें काव्यत्व का आधारभूत बीजारोपण किया जो शनैः–शनैः एक विराट स्वरूप धारण कर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में समाहित हो गया।

कविवर 'अनुराग गौतम' 84 बसंत और इतने ही पतझर देख चुके थे। इनका गाँव विराट रूप धारण कर महानगरीय बोध के रस–वैविध्य का पान कर रहा है, किन्तु उसमें अब ग्राम्य जीवन की वह मिठास कहाँ है? जिसे पान कर कवि ने स्वयं को गौरवान्वित माना। 'आँसू में यही प्रणय भावना देखेंः–

उठ रहीं जलनिधि हृदय में,
आज माला सी तरंगें।
जागती हैं कर्मठों में
भव्य आशा की उमंगें।4

आज यह भावना कहीं खो गयी है। कवि को इसका पूरा अहसास है, अपितु उसके दर्द में इस कसक को इनके गीतों में अनुभूत किया जा सकता हैः–

शिक्षा व रोटी की तलाश में गाँव छोड़कर नगर–महानगर की ओर उन्मुख हुआ कवि का आरम्भिक जीवन कब समय और परिस्थितियों के थपेड़ों और महानगरीय अजनबीपन से विद्रोह कर बैठा, यह तो उसके काव्य से गुजरकर ही जाना जा सकता है। पृथकशः शोध के आयामों को भी दस्तक देता है। काल–चक्र के निनाद ने कविवर 'अनुराग गौतम' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में परिपक्वता भर दी है। छोटी–छोटी तुकबन्दियों और आलेखों निबन्धों से आरम्भ हुई कवि की यात्रा शनैः–शनैः बहु आयामी होती गयी है, उसका विस्तृत फलक हो गया है। कविता, गीत, नवगीत, गज़ल, मुक्तक, दोहा, कहानी, निबन्ध, समीक्षा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, सम्पादन से भी आगे बढ़कर उसका व्यक्तित्व अपने कृतित्व के द्वारा 'महाकाव्यत्व'' की ओर सफलतापूर्वक अर्द्धगामी हो चुका था। 'दर्पण मेरे गाँव का' और 'चाँदनी' महाकाव्य इसके प्रमाण हैं।

'आँसू', से आरम्भ हुआ कवि का यात्रा–अभियान विविध पड़ावों से होकर गुजरता रहा। 'सोनजुही की गंध', 'आँगन की सोनपरी', 'हरी दूब का दर्द', 'समर्पण', 'मनुहार', 'सांसों की समाधि' और 'एक टुकड़ा आसमान' को आत्मसात् करता हुआ चन्द्रमा की निर्मल चाँदनी में दर्पन मेरे गाँव को निहार रहा है। धन्य है कविवर अनुराग गौतम की यह काव्य यात्रा और इस यात्रा अभियान में आने वाले विविध मनोहारी पड़ाव।

अस्तु **'आँसू'** कविवर 'अनुराग गौतम' को काव्य यात्रा का प्रथम पड़ाव है, जिसमें उनकी कुछ गीति रचनाएँ हैं, जिनकी बानगी ऊपर दी जा चुकी है। वस्तुतः 'आँसू' की गीति रचनाएँ कवि के भावी काव्यत्व की भविश्यवाणी करती हैं। आइए, एक गीति स्थल देखें –

जग आज मनाता है होली,
घर–घर में खुशियाँ छाई हैं।
चहुँ ओर नवीन बधाई है
लेकिन मेरे व्याकुल उर में
जलती अरमानों की होली।[5]

'सोनजुही की गंध' कविवर 'अनुराग गौतम' की काव्य यात्रा का द्वितीय पड़ाव है, जिसमें उनकी 98 परम्परावादी गीति रचनाएँ हैं। इसका एक गीत स्थल देखें –

''मन को तो मैं बहला लूँगा
देकर एक खिलौना कोई,
जिनमें रूप तुम्हारा है,
उन गीली आँखों का क्या होगा?[6] गीत–2

कवि की ये प्रणय रचनाएँ हैं। भाव, भाषा एवं गीत शिल्प का अनूठा समाहार इस गीति संग्रह में देखने को मिलता है। 'आँगन में सोनपरी' यह भी कवि अनुराग गौतम की 93 गीति रचनाओं के रूप में उनकी काव्य यात्रा का तृतीय पड़ाव है। उन रचनाओं में शिल्प एवं भाषा की कसावट स्पष्ट दिखलायी देती है –

''अपनोंकी भी बात कभी मत
अपनों से कहना।
पीड़ा का संगीत, ''
अधर पर लेकर चुप रहना। गीत–3
''सखि री! बसंत आया
मंदिर गंध पूरित प्याली से
मधुरस छलकाया।''8 गीत–64

इस संग्रह की रचनाओं में यद्यपि प्रेम की ही प्रधानता है, तथापि इनमें कवि दृष्टि प्रकृति और सृष्टि के अनुभवों को समन्वय करती प्रतीत होती है। **'हरी दूब का दर्द'** कविवर अनुराग गौतम

की काव्य–यात्रा का चतुर्थ पड़ाव है जिसमें उनकी 114 गीति रचनाएँ संग्रहीत हैं। ये गीति रचनाएँ नवगीत के शिल्प को समाहित किए हैं, जिनका कलेवर न केवल आम आदमी की पीड़ा, दर्द और कसक को आत्मसात् किए है, अपितु युगीन विसंगतियों और विषमताओं को भी अभिव्यक्ति प्रदान कर रहा है। एक–दो गीत स्थल देखें –

''हमें हमारे
कर के ही तो
साँपों ने काटा है।''9 गीत–16
''नंगे पाँव
रेत पर तपते
रह–रह काँप रहे हैं।''10 गीत–44

कुल मिलाकर, इस गीति संग्रह में कविवर अनुराग गौतम के गीत शिल्प का मंझा हुआ रूप देखने को मिलता है। इसमें कुछ गीत लम्बे भी हो गये हैं, जो भाव एवं गीत शिल्प की दृष्टि से न केवल विविध भाव–भंगिमाओं को आत्मसात् किए हैं, अपितु प्रगीतों की श्रेणी में भी आते हैं अथवा इन्हें निबन्ध गीत भी कहा जा सकता है।

'समर्पण' कविवर अनुराग गौतम के 116 गद्य गीतों का 'संग्रह' है, जो उनकी काव्य यात्रा का पाँचवाँ पड़ाव है। इन गीति रचनाओं में कवि का मन भक्ति एवं अध्यात्मोन्मुख दृष्टिगोचर हो रहा है, यथा –

''प्रभो!
भोग और त्याग
दोनों ही मन की पर्तें हैं
दोनों ही अपनी–अपनी जगह
सार्थक और सही।''11 गद्यगीत–114

इस संग्रह की रचनाओं में कवि का प्रेमिल मन विस्तार पाता गया है। उसके प्रेम में व्यापकता आती गयी है –

''रूपराशि!
मैं तुम्हें, अपने नेह–बंधन में बांध
सीमित रखना नहीं चाहता
मेरा नेह, तुम्हारे नेह में मिल जाए
और तुम, करुण घट
नहीं, नहीं करुण धन बनकर
समस्त विश्व पर बरस पड़ो।
यह है मेरी हृदयेच्छा।''12 गीत–33

सारतः जैसा कि इस संग्रह का नाम है –**'समर्पण'!**यही भक्तिमय बोध इसमें समाहित गीत रचनाओं के अध्ययन से होता है। **'मनुहार'** में कविवर अनुराग गौतम की 162 गद्यगीत रचनायें हैं, जो उनकी काव्य–यात्रा का छठा पड़ाव है। ये गीति रचनाएँ भी भक्ति एवं अध्यात्म का समन्वय प्रस्तुत करती हैं। उनमें कवि के हृदय की पीड़ा, आँसू और पुकार अपने इष्ट का आह्वान कर रही है। एक स्थल देखें –

''पिता
तू मुझे दे दे
अपना उत्कट प्रेम,
दे दे मुझे अमर क्षेम
काटने दे मुझे हिंसा के बंधन
सफल हो जन मानस का चिन्तन।''13 गद्यगीत–19

''सांसों की समाधि' कवि की काव्य–यात्रा का सातवाँ पड़ाव है। इसमें कवि के 110 गद्यगीत हैं। भक्ति और अध्यात्म का विराट स्वरूप इनमें देखने को मिलता है, जो समग्र विश्व के कल्याण की कामना से ओत–प्रोत दृष्टिगोचर होता है –

''मैं तुम्हारे विश्व परिवार में
सभी की चरण धूलि का एक कन हूँ
गर्व है इसका मुझे
अपने साहस नहीं होता
अपने पास तुम्हें बुलाने का।''14

इस प्रकार **'समर्पण' 'मनुहार'** और **'सांसों की समाधि'** कविवर अनुराग गौतम की भक्ति एवं आध्यात्मिक साधना के विविध आयामों की झाँकी प्रस्तुत करते हैं जिनको पढ़कर सहृदयी झूम उठता है, भाव विभोर हो जाता है। भाव, भाषा तथा काव्य शिल्प की परिपक्वता के दर्शन इन संग्रहों में होते हैं।

'एक टुकड़ा आसमान' कवि एवं कहानीकार अनुराग गौतम की काव्य यात्रा का 'आठवाँ पड़ाव' एक कहानीकार के दर्शन कराता है। इस कहानी संग्रह में उनकी 12 कहानियाँ हैं, जिनके नाम हैं– नई लड़की, आँसुओं का मिलन, एक टुकड़ा आसमान, मजहब की दीवारें, स्वार्थ की रेखायें, रक्षा बंधन और साम्प्रदायिकता।

ये सभी कहानियाँ कहानी–संरचना–शिल्प के अनूठे नमूने हैं, जिसमें स्वातंत्र्योत्तर भारत की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विषमताओं और विसंगतियों के दर्शन होते हैं। निस्संदेह, इन कहानियों में एक कहानी लेखक के रूप में श्री अनुराग गौतम की अनूठी कहानी कला के दर्शन होते हैं।

'दर्पन मेरे गाँव का' महाकवि अनुराग गौतम से पाठकों को परिचित कराता है, जो महाकाव्य के रूप में उनकी काव्य यात्रा का नौवाँ पड़ाव है। इस क्रम में **'चाँदनी'** उनका दसवाँ पड़ाव है, जो महाकाव्य की अनूठी झाँकी प्रस्तुत करता है। ये दोनों ही काव्य कृतियाँ महाकवि अनुराग गौतम के एक सफल प्रबन्धकार के रूप को, उनकी काव्य कलागत परिपक्वता, दक्षता एवं चारूता को दर्शाती हैं। इन दोनों ही महाकाव्यों से एक–एक उदाहरण देते हुए अपने वक्तव्य को समाप्ति की ओर मोड़ना चाहता हूँ –

''तन की पीड़ा है पग–पग पर हमें तोड़ती।
मन की पीड़ा किन्तु हृदय से हृदय जोड़ती।

मानवीय सम्बन्ध सृष्टि से सदा अमर है।
इन पर आधारित संसृति में गाँव–नगर है।''15
'दर्पन मेरे गाँव का',
''हे संसार ऋणी भारत का, प्रेम–त्याग के कारण ही।
ज्योतिमर्म आलोक प्रदाता, करे सत्य का धारण ही।
क्षुद्र क्षितिज सारी संसृति का, विपक्ष न हमको कर पाया।
सांस्कृतिक आदर्श हमारा है सारे जग ने गाया।।''16
चाँदनी,

सारतः उपर्युक्त दोनों महाकाव्यों **'दर्पन मेरे गाँव का'** और **'चाँदनी'** की पृथक–पृथक विस्तृत समीक्षाएँ अपेक्षित हैं। यही नहीं, इन कृतियों के अतिरिक्त श्री 'अनुराग गौतम' की अन्य कृतियां हैं– **कवि क्रन्दन, पंछी, वेदना पद्मावती, जिन्दगी, अनुराग दोहावली तथा धूप आती ही नहीं** (गजल संग्रह) जिनका उल्लेख इस आलेख का कलेवर बढ़ने के कारण नहीं किया जा रहा है। पृथकशः उनका भी विवेचन एवं विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है, जिससे शोध के क्षेत्र में विविध आयामों का निरूपण हो सकेगा।

अस्तु, यह सहज, सरल आत्मीय, मिलनसार और सपाटयानी करने वाला अनूठा व्यक्तित्व अब तक अनेकशः काव्य कृतियाँ हिन्दी साहित्य को दे चुका है। अभी आपकी कुछ ही काव्य कविताएँ प्रकाशित हुई हैं, इसी कारण इनके कृतित्व पर अध्ययन एवं विश्लेशण की भी अपनी सीमाएँ हैं। लेकिन अभी तक जो काव्य कृतियाँ प्रकाश में आयी हैं वे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के असाधारण आयामों को इंगित करती हैं, असीम सम्भावनाओं को विस्तार देती हैं निस्संदेह, कविवर अनुराग गौतम का महान रचनाकार अहंकार रहित होकर निर्द्वन्द्व एवं निश्छल भाव से काव्य सृजन में रत रहता हुआ अपने जीवन पथ पर माँ सरस्वती और भारतीय संस्कृति की प्रतीकात्मक साहित्य ध्वज पताका को अपने करों में लेकर आगे बढ़ता हुआ मौन सन्देश देता जा रहा था कि कालचक्र ने 17 अगस्त, 2017 को उनकी अपनी लीला ही समाप्त कर दी। उनके जीवन का आद्योपान्त ध्येय रहाः–

''ऐसा कुछ कर चले सखे हम
काल चक्र के आते–आते।
धरती मँहके अम्बर मँहके,
मँहक उठे जग जाते–जाते।।''[17]

सन्दर्भ :–

1. डॉ0 महेश दिवाकर 'सम्पादक : अनुराग गौतमः अमृत महोत्सव – अभिनन्दन ग्रन्थ – अमृत महोत्सव : यह प्रयोजन क्यों, पृष्ठ सं0–5।
2. वही पृष्ठ सं0–6
3. अनुराग गौतम : आँसू, पृष्ठ सं0–24
4. अनुराग गौतम : आँसू
5. अनुराग गौतम : आँसू के गीत–1
6. अनुराग गौतम : सोनजुही की गद्य के गीत–2
7. अनुराग गौतम : आँगन में सोनपरी के गीत–2
8. अनुराग गौतम : आँगन में सोनपरी के गीत–64
9. अनुराग गौतम : हरी दूब का दर्द के गीत – 16
10. अनुराग गौतम : हरी दूब का दर्द के गीत – 44
11. अनुराग गौतम : समर्पण के गद्यगीत–114
12. अनुराग गौतम : समर्पण के गद्यगीत–33
13. अनुराग गौतम : मनुहार के गद्यगीत–14
14. अनुराग गौतम : सांसों की समाधि
15. अनुराग गौतम : दर्पन मेरे गाँव की, पृष्ठ सं0–27
16. अनुराग गौतम : दर्पन मेरे गाँव का पृष्ठ सं0–428–29
17. डॉ0 महेश 'दिवाकर': हिन्दी की मुस्कान, पृ0सं0–6

❒❒❒

UGC APPROVED NO- 41232

ISSN 2347- 4041

वर्ष : 08,
अंक : 07,
मार्च : 2019
IMPECT FACTOR NO : 3.245

साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानविकी, विज्ञान एवं सभी विषयों की

संस्कार चेतना

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका (मासिक)

INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

प्रथमां विश्ववारां तां संस्कृतिं स्वयुगानुगाम्। संस्कारचेतना धत्ते वसुधैव कुटुम्बकम्।।

साहित्य, शिक्षा, शोधपत्र, मानविकी, विज्ञान एवं सभी विषयों की

मूल्यांकित

संस्कार चेतना

अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिका (मासिक)

ISSN 2347 : 4041

वर्ष -08
अंक -07
मार्च, 2019

मार्गदर्शक:	स्वामी श्रीजीवन दास श्रीवास्तव शास्त्र वारिधि कुरुक्षेत्र	श्री जय भगवान सिंगला लेखक एवं साहित्यकार कुरुक्षेत्र	डॉ. सुधीर कुमार, पूर्व निदेशक हरियाणा संस्कृत अकादमी पंचकूला	डॉ. कृष्ण मलिक, पूर्व कुलपति कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र	डॉ. तेजराम गुप्ता, पूर्व प्राचार्य प्राणी शास्त्र विभाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र	श्री प्रदीप शर्मा समाजसेवी दिल्ली

मार्गदर्शक:

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, विद्यावाचस्पति

पूर्व सदस्य, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद्

पूर्व अध्यक्ष, दर्शन विभाग, कु.वि. कुरुक्षेत्र

मुख्य संरक्षक

डॉ. बी. के. कुठियाला

अध्यक्ष, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी परिषद्

प्रधान संपादक

डॉ. विजय दत्त शर्मा

प्रबन्ध संपादक

डॉ. गणेश दत्त

डॉ. तरसेम कौशिक

डॉ. प्रवीण वत्स

संपादक

डॉ. केवल कृष्ण

उप संपादक

डॉ. ऋषिपाल

डॉ. अशोक कुमार

शोध चेतना अकादमी

'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

email: sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com

सम्पादकीय कार्यालय: संपादक, संस्कार चेतना, 153, सैक्टर- 30, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136118

पंजीकृत कार्यालय: संपादक, संस्कार चेतना, सिरसमा, बीड़ मथाना, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136131

ISSN : 2347–4041
UGC Approved No. 4123
Impact Factor 3.24
संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका
वर्ष 8, अंक 7, मार्च 2019

मधु कांकरिया के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श

ऋतु
शोधार्थी
वैंकटेशवर विश्वविद्यालय
गजरौला, अमरोहा, उत्तर प्रदे

हिन्दी साहित्य दिन प्रतिदिन समृद्ध होता जा रहा है। हिन्दी साहित्य में समाज और जीवन के आयामों का यथार्थपरक चित्रण दिखलाई पड़ता है। हिन्दी साहित्य के विकास में महिला साहित्यकारों का योगदान है। वर्तमान हिन्दी महिला साहित्यकारों में मधु कांकरिया का नाम मान-सम्मान से लिया जाता श्रीमति मधु कांकरिया समकालीन हिन्दी कथा साहित्य की अग्रणी हस्ताक्षर है। मधु कांकरिया का जन्म मार्च 1957 को कलकत्ता शहर के निम्न मध्यवर्गीय मारवाड़ी जैन परिवार में हुआ। इनके पिता जी का श्री धर्मचन्द बाड़िया व माता का नाम अक्षया देवी बाड़िया है। उन्होंने अपनी आरम्भिक शिक्षा कोलक के मारवाड़ी बालिका स्कूल में ग्रहण की। इसके पश्चात् उन्होंने स्नातक(1972-1975) लेडी ब्रोबोर्ण को से प्राप्त की। उन्होंने एम.ए(अर्थशास्त्र) की शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय से ग्रहण की। रूढ़ियों से टक करने का स्वभाव मधु कांकरिया जी की प्रमुख विशेषता रही है। साहित्य लेखन में भी उनकी विश दिखलाई पड़ती है। मधु कांकरिया जी का साहित्य लेखन उनकी बहुमुखी प्रतिभा का परिचायक है। कांकरिया के छह उपन्यास एवं तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है। उन्होंने अपने कथा साहित सामाजिक, धार्मिक समस्याओं को उठाया है। उनके कथा साहित्य का विवरण इस प्रकार है-

उपन्यास-

1. खुले गगन के लाल सितारे — सन्-2000
2. सलाम आखिरी — सन्-2002
3. पत्ताखोर — सन्-2005
4. सेज पर संस्कृत — सन्-2008
5. सूखते चिनार — सन्-2012
6. हम यहां थे — सन्-2018

कहानी संग्रह-

1. बीतते हुए — सन्-2004
2. ....और अंत में ईशु — सन्-2008
3. युद्ध और बुद्ध — सन्-2014

समाजिक विमर्श-

1. अपनी धरती अपने लोग
2. बादलों में बारूद(यात्रा संस्मरण)

मधु कांकरिया जी ने अपने साहित्य में अपनी गहन अनुभूतियों को गम्भीरता से व्यक्त कि उन्होंने ग्रामीण अंचल से लेकर महानगरीय परिवेश को व्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है। मधु कथा साहित्य में आतंकवाद, फौजी जीवन, वृद्धों की स्थिति, नारी की स्थिति, ड्रग्स व्यापार आदि सम

को चित्रित किया गया है। मधु कांकरिया जी का साहित्य समाज और जीवन के विभिन्न सरोकार प्रस्तुत करने वाला साहित्य है। वृद्धों की स्थिति समाज में भयंकर होती जा रही है। मधु कांकरिया जी ने अपने कथा साहित्य में वृद्धों की अपेक्षाओं व उपेक्षाओं को परिलक्षित करने का कार्य किया है। वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप जहां मानव की औसत आयु बढ़ी है, वहीं बुढ़ापे की समस्याएं बढ़ रही है। वर्तमान में भारत को युवाओं का देश कहा जाता है, लेकिन वह दिन दूर नहीं जब भारत में वृद्धों की संख्या सबसे अधिक होगी।

वृद्ध-विमर्श-

जब वृद्धों को समाज और परिवारों में सम्मान मिलता था, तब वृद्धावस्था को किसी समस्या के रूप में नहीं देखा जाता था। उत्तर आधुनिकता एवं पाश्चात्य संस्कृति के कारण पारिवारिक ढांचे में परिवर्तन हो रहे है। वृद्धों की सामाजिक स्थिति में काफी बड़े परिवर्तन देखने को मिलते है। वृद्धों की बदलती सामाजिक स्थितियों ने वृद्ध-विमर्श को एक नया धरातल प्रदान किया है। इस विषय पर चर्चा करने से पूर्व वृद्ध की परिभाषा समझना अनिवार्य है।

प्रो॰ सिलावट सुधा एस. (वृद्धावस्था की समस्याएं: सामाजिक सहयोग, 1995-1999) के अनुसार "वृद्धावस्था की उम्र, शारीरिक स्थिति तथा मानसिक दशाएं कारक निर्धारित करते है। इस अवस्था में व्यक्ति की उत्सुकता में कमी, निराशा, आलस्य, अक्षमता, चिड़चिड़ापन, एकाग्रप्रियता, सामंजस्य का अभाव, उपदेश देना आदि प्रमुख है, जो शारीरिक एवं मानसिक लक्षण है। ऐसे व्यक्ति आत्म-केन्द्रित, संवेदनशील, निराशावादी, दुःखी, विषादमय एवं भविष्य के प्रति चिन्तित रहते है। इसलिए वे अपना जीवन व्यवस्थित तथा संतुलित नहीं कर पाते है। इनकी प्रमुख समस्याओं में समय व्यतीत करने तथा मनोरंजन की समस्या, आवास की समस्या, सामाजिक सामंजस्य, आर्थिक तथा पूंजी की देखभाल सम्बंधी प्रमुख समस्याएं होती है।"[1]

"उत्तर आधुनिकता समय में लोगों की दृष्टि हाशियाकृत पर पड़ी है तो स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक के साथ-साथ अब वृद्धों पर भी ध्यान केन्द्रीत किया जा रहा है, परिणामस्वरूप वृद्धावस्था विमर्श उभरकर सामने आया है, लेकिन सिमोन द बुआ(9 जनवरी 1908-14 अप्रैल 1986) ने 1950 से ही वृद्धावस्था का चिंतन शुरू कर दिया था। 1970 ई॰ में प्रकाशित उनकी शोध कृतिला विएलेस्से(फ्रैंच)" ओल्ड एज(पौटिक [illegible] 1977 ई॰ में प्रकाशित हुई। सिमोन की भविष्योन्मुखी विश्व दृष्टि के कारण यह कृति वृद्धावस्था [illegible] की गीता बन गई। हिन्दी में चन्द्रमौलेश्वर प्रसाद ने इस कृति का सार संक्षेप"वृद्धावस्था विमर्श" शीषर्क से अनुवाद किया।"[2]

वृद्ध विमर्श के आयाम-

[illegible] समस्याएं

[illegible] में परिवर्तन

[illegible] के प्रति अपराध

[illegible] एवं एकाकीपन

[illegible] समस्याएं

[illegible]

[illegible] विकार

[illegible]

[illegible] समस्याएं

[illegible] समस्याएं

सामाजिक समस्याएं-

(1) **सम्बंधों में परिवर्तन**- बदलते सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश ने सम्बंधों में परिवर्तन ला दिया सम्बधों में गरमाहट समाप्त होती जा रही है। पारिवारिक सम्बंधों में गिरावट आ रही है। वर्तमान स्थिति है कि वृद्धों को घरों में बेकार की चीज समझा जाने लगा है। बदलते आर्थिक परिवेश में अर्थ का बढ रहा है। अर्थ के बढ़ते वर्चस्व ने सम्बंधों को भी प्रभावित किया है। मधु कांकरिया के कहानी संग्रह अंत में ईशू" कहानी संग्रह में संकलित कहानी कीड़े के माध्यम से लेखिका ने स्पष्ट किया है कि प्रो की देह में जब कीड़े पड़ जाते है तब उनका अपना पुत्र उनकी बिमारी से तंग आ जाते है।

"वही मयंक, उनका खून, उनका अंश, किस प्रकार उनके घावों को आंखे सिकोड़ कर कन्धे उचकाने एवं नाक पर रूमाल रखकर बतियाने जैसी बारीकियों से संप्रेषण के नए कीर्तिमान करते हुए, " टू हूम इट------में कसंर्न के अंदाज में उन्हें अपने जर्जर हो चुकने का अहसास करा था-पापा, आपको यह घाव, बदबू और कीड़े की यह बिमारी और हमारी जिन्दगी की तेज रफतार के साथ तालमेल बिठाना है।"[3]

(2) **वृद्धों के प्रति अपराध**- बढ़ते अपराध ने समाज की झझकोर कर रख दिया है। महा परिवेश में बढ़ते अपराध समाज की संवेदनशून्यता की ओर संकेत करते है। महानगरों में वरिष्ठ के प्रति अपराध के आंकड़ों में वृद्धि हुई है मधु कांकरिया के उपन्यास "हम यहां थे" में इसकी पु है।

इस उपन्यास के पात्र जमनालाल जी का पुत्र अपने पिता की उम्र के नौकर लालबहादुर को मारता है, जिसका कारण यह था कि उसकी कमीज पर कुछ दाग रह गये थे।

"एक बार सुबह ही सुबह लाल बहादुर को फूट-फूटकर रोते हुए देखा, जंगली गैंडे-सा लाल कभी नहीं रोया था, फिर क्या हुआ? उनके पोते ने बताया-" पापा की शर्ट पर दाग रह गये थे, इसी पापा ने उसे थप्पड़ लगा दिया था।"[4]

(3)**अलगाव एवं एकाकीपन**- महानगरीय समाज में वृद्धों में अलगाव एवं एकाकीपन की बहुत ही गम्भीर हो चुकी है। पारिवारिक सदस्यों के बीच प्रेमाभाव के कारण अलगाव और एकाकीपन समस्या बन चुकी है। सम्बंधों में बदलाव के कारण भी अलगाव व एकाकीपन बढ रहा है। मधु की कहानी कीड़े में प्रो.वर्मा बिमारी की अवस्था में स्वंय को अकेला एवं शून्य महसूस करता है।

"शून्य में एकाएक उभरा- वे निर्वासित और एकाकी है। गहन उदासी, ऊब और अकेले ठिठुरन से अकड़ी अपनी जख्मी आत्मा को सहलाना चाहा। उन्होंने, पर घनीभूत हताशा और शक्ति से आंखें तंदिल होने लगी, उनकी चेतना मंद पड़ी। वे डूबने लगे।"[5] प्रो० वर्मा के शब्द स्पष्ट करते वृद्धावस्था रूपी बिमारी में किस प्रकार एकाकीपन के शिकार होते है।

मनोवैज्ञानिक समस्याएं- वर्तमान परिवेश में संयुक्त परिवारों के विघटन, बढ़ती महंगाई, बेरो गिरते मानव मूल्य ने सामाजिक ढांचे को नष्ट कर दिया है। वृद्धों को समाज की धरोहर के रूप में जाता था परन्तु स्थिति यह है कि आज वृद्ध मनोरोगों एवं मनोविकारों से ग्रस्त दिखलाई पड़ते है। मनो के परिणामस्वरूप वृद्धों में आत्महत्या की प्रवृतियां विकसित होने लगी है। परिवार से उपेक्षित व मनोविकारों का शिकार बन रहे है। वृद्धों को जीवित अवस्था में भी मृत्युबोध हो रहा है। इस अव में वे जीवित रहने की अपेक्षा मरना या मृत्यु का वरण करना पसंद करते है। जिन वृद्धों की संताने में कार्यरत है, ऐसे वृद्ध आत्महत्या का भी प्रयास करते हुए दृष्टिगोचर होते है। मधु कांकरिया ने अपनी संग्रह में संकलित कहानी "मिसफिट" की अपूर्वा अग्रवाल, जो विदेश में कार्यरत है उसके पिताजी मनो

तौर पर अस्वस्थ नजर आते है। अपूर्वा अग्रवाल अपने पिता के संदर्भ में कहती है कि "उसके दुख अब खुलकर बोलने लगे थे। उसकी देह के अंग-अंग अब इस बोलने में शामिल थे। उसकी आवाज के कोने-कोने दुखीले है। उठे थे- आयी थी पूरे डेढ महीने के लिए। सोचा था इंडिया जाऊंगी, यार दोस्तों के साथ घूमूंगी। ओह, कितनी तमन्नाओं के साथ मै यहां आयी थी। पर जब से आयी हूं, इनकी एक ही रट बराबर सुन रही हूं-मुझे मार डालो, मुझे मरना है। कोई मुझे जहर की सुई दे दे, कोई मुझे नदी में डूबो दो, कोई मुझे बिजली का करंट लगा दे। एक बार तो घर के पास वाले तालाब में ही कूद पड़े थे। ये तो मेरे किसी दोस्त ने देख लिया और तुरन्त उन्हें किसी तैराक से निकलवाया।"[6]

उपरोक्त शब्द स्पष्ट करते है कि मनोविकार के परिणामस्वरूप वृद्ध व्यक्ति आत्महत्या की ओर अग्रसर हो रहे है।

शारीरिक समस्याएं- मनुष्य अपनी किशोरावस्था खोकर, जीवन, यौवन को खोकर वृद्धावस्था की ओर अग्रसर होता है। इस यात्रा के दौरान अनेक शारीरिक परिवर्तन मनुष्य की काया में देखने को मिलते है। "वृद्धावस्था में मनुष्य का शरीर अनेक रोगों का घर बन जाता है।" मदाम द सेविन ने 27 जनवरी 1687 को इस सुंदर इसका सुंदर वर्णन इस तरह से किया था-नियति हम इतनी दयालु है कि हमारे जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का हमें पता नहीं चलता। यह ढलान इतनी कोमलता से फिसलती है कि समय की गति का आभास नहीं होता। वृद्धावस्था में शारीरिक समस्याएं जीवन के प्रति मोह समाप्त कर देती है। वृद्ध व्यक्ति स्वयं से छुटकारा करना चाहता है। मधु कांकरिया की कहानी "कीड़े" में दिखाया है कि प्रो० वर्मा अपने शारीरिक कष्ट से दुखी होकर जीवन को समाप्त करना चाहता है।

"नर्स आरबर्तोइतनी बदबूओफ, जी आवाज की करते हुए उन्होंने फिर नर्स को आवाज दी। उनका सारा शरीर ने चिल्लाया, लगा जैसे विश्व के सारे कीड़े एक साथ झपट पड़े है उन पर और कुरेद रहे है उनके घावों को। असह्य वेदना के बीच खुद को सांत्वना देनी चाही, देह धरे को दंड हैंपर कीड़ों का आक्रमण बढ़ गयोंघाव टीस मारने लगे।"[7]

आर्थिक समस्याएं- वृद्धों की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक अभाव है। जीर्ण शरीर एवं शारीरिक अक्षमता के कारण व पहले की भांति कुशलतापूर्वक कार्य करने में अक्षम होते है। जिसका परिणाम यह होता है कि वृद्धों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। बेरोजगार वृद्ध व्यक्ति को परिवार एवं समाज में उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। मधु कांकरिया जी ने अपने कहानी संग्रह "बीतते हुए" में संकलित कहानी "फैसला फिर से" के माध्यम से वृद्ध महिला महाश्वेता की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। "यही लूट है भाई, गलाकाट लूट है....कई बार बुदबुदाती हुई अपने घिसे-पिटे बदरंग पर्स के बैग से अपने सूखे डंठल से हाथों को डालकर रूपय निकालती और एक-एक नोट को ध्यान से गिनते हुए.....उन पर उंगलियां फेरते हुए यूं नोट थमाती, मानो कलेजा थमा रही हो।"[8]

उपरोक्त शब्द स्पष्ट करते है कि वृद्ध व्यक्तियों एवं बेरोजगारों के लिए धन कितना महत्वपूर्ण होता है। वृद्ध व्यक्ति पैसे को बड़े ध्यान से खर्च करते है।

उपरोक्त सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं की व्याख्या से स्पष्ट होता है कि आधुनिक परिवेश में वृद्ध विमर्श एक ज्वलंत विमर्श के रूप में उभर रहा है। मधु कांकरिया जी ने अपने साहित्य के माध्यम से वृद्ध विमर्श पर प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है।

---

[1] [illegible] शर्मा, कंचनलता, वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा, शोषण एवं समस्याएं, [illegible] हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2009

2. http://saagrika.blogspot.in/2017/08/blog-Post-B.html.
3. कांकरिया, मधु और अंत में ईशु, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ-65
4. कांकरिया, मधु, हम यहां थे, किताबघर, प्रकाशन,_ नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ-39
5. कांकरिया, मधु और अंत में ईशु, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ-58
6. कांकरिया, मधु, युद्ध और बुद्ध, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ-127
7. कांकरिया, मधु और अंत में ईशु, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ-61
8. कांकरिया, मधु, बीतते हुए, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ-160

संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

शोध दिशा

62

ISSN 0975-735X

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 62/4 अप्रैल-जून 2023 400.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ॰प्र॰)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा

डॉ॰ मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन॰सी॰आर॰

डॉ॰ अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ॰ मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ॰ शंकर क्षेम
डॉ॰ प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ॰ अशोककुमार
09557746346
डॉ॰ कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ॰ अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी॰ए॰

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : चार सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल

'ढलती साँझ का सूरज' उपन्यास में किसान विमर्श

डॉ॰ ऋतु, सहायक प्रोफेसर
हिंदू कॉलेज, सोनीपत (हरि॰)

हिंदी साहित्य जगत में कथाकार मधु कांकरिया एक ऐसी हस्ताक्षर हैं जो भारतीय समाज [illegible] विकट समस्याओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान कर रही हैं। इनकी प्रत्येक कृति में [illegible] की गंभीरता स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है। उनकी दृष्टि में हर कृति एक प्रोजेक्ट है। मधु [illegible] अपने उपन्यासों में नक्सली आंदोलन, वेश्यावृत्ति, साध्वी जीवन के यथार्थ, आदिवासी [illegible] और संघर्ष की साहित्यिक यात्रा से गुजरती हुई महाराष्ट्र राज्य में किसानों की आत्महत्या के [illegible] परिवेश को उजागर करती हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के लिए किसान एक राजनीतिक [illegible] है। जैसे ही चुनाव नजदीक आते हैं तुरंत किसान पर चर्चा आरंभ हो जाती है। किसानों की [illegible] स्थिति पर चर्चाएँ होती है किंतु किसान की समस्याओं का समाधान नहीं होता। सत्ता की [illegible] वाले राजनीतिक दल स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट लागू करने का वायदा कर किसान [illegible] एवं समर्थन प्राप्त करने के योजना बनाते हैं। 26 नवंबर, 2021 में दिल्ली में आरंभ हुए [illegible] आंदोलन का प्रमुख कारण केंद्र सरकार की किसानों के साथ की गई वायदा खिलाफी ही [illegible] कसर तीन कृषि कानूनी ने निकाल दी थी जो कि इस किसान आंदोलन का [illegible] कारण था। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान समेत कई प्रदेशों के किसानों ने [illegible] दिल्ली को घेर लिया था।

[illegible] आंदोलन के प्रमुख किसान नेता चौ॰ राकेश टिकेत ने किसानों को संगठित कर किसानों [illegible] व कृषि कानूनों की खामियों को लेकर केंद्र सरकार और कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर [illegible] किया। यदि किसानों पर जबरदस्ती इन कानूनों को लागू किया गया तो केंद्र सरकार को [illegible] चुनाव में इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। भारी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती व शक्ति [illegible] भी किसानों को टस-से-मस न कर सका। इस फसल और नसल की लड़ाई में हरियाणा [illegible] के किसानों ने दृढ़ संकल्प और संयम का प्रदर्शन किया। किसान आंदोलन से जुड़े [illegible] और विपक्ष के नेताओं ने सत्ता का लालच देने के प्रयास भी किए। करोना जैसी [illegible] में भी किसान अपने जान की परवाह न करते हुए किसान आंदोलन को मजबूत [illegible] प्रयत्नशील दृष्टिगोचर होता है। राजनीतिक षड्यंत्रों ने किसान आंदोलन को बदनाम [illegible] प्रयास किया। किसान आंदोलन को जाटों का आंदोलन और खालिस्तानियों का [illegible] मजबूत इरादों और संघर्ष ने किसानों को आत्मबल प्रदान किया। किसान [illegible] 700 किसानों ने शहादत दी। इस संघर्ष में शहादत देने वाले किसान परिवारों [illegible] और विपक्ष से आर्थिक मदद की अपेक्षा झूठे आश्वासन भरपूर मिले। लगभग एक वर्ष [illegible] परिणामस्वरूप केंद्र सरकार ने कृषि कानूनों को वापिस लेने की औपचारिक घोषणा [illegible] देश का किसान अपनी फसल को न्यूनतम समर्थन मूल्यों से कम दाम पर बेचने [illegible] है। कथाकार मधु कांकरिया ने महाराष्ट्र राज्य के किसानों के यथार्थ को

ISSN 09[illegible]

अपने उपन्यास में स्थान दिया है।

किसान विमर्श की परिभाषाएँ–विमर्श शब्द एक व्यापक एवं विस्तृत, जिसकी उत्पत्ति मृश् धातु में वि उपसर्ग तथा घञ् प्रत्यय लगाने से हुई है। अतः विमर्श शब्द का व्युत्पत्ति-मूलक अर्थ-आलोचना करना, विचार-विमर्श, समझना या सोचना आदि है।

डॉ॰ हरदेव बाहरी के हिंदी पर्याय कोश में विमर्श के कई अर्थ दिए गए हैं–'तबला-ए-ख्याल, परामर्श, मशविरा, रामबात, विचार-विमर्श आदि।'[1]

स्वामी सहजानंद सरस्वती ने किसान के बारे लिखा है कि 'किसान कहने से बहुत तरह के लोग आ जाते हैं, ऐसे भी लोग अपने आपको किसान कहते हैं, कहने की हिम्मत करते हैं जिनके पास हजारों बीघा केवल रैयती है, लेकिन सच पूछा जाए तो वे जमींदार ही हैं। सामान्य तौर पर किसान उसी को कहा जाना चाहिए जिनकी प्रधान जीविका खेती हो।'[2]

कथाकार मधु कांकरिया ने महाराष्ट्र के कामथड़ी के किसानों की आत्महत्या के यथार्थ और उसके कारणों पर गहनता से विचार किया है। एक किसान की आत्महत्या सरकार और उसकी नीतियों की विसंगतियों पर प्रश्नचिह्न लगाती है। भारतीय आबादी का बहुत बड़ा भाग कृषि से जुड़ा हुआ है। किसान, खेतीहर मजदूरों के यथार्थ को उजागर करता यह उपन्यास किसान जीवन का दर्पण कहा जा सकता है। इस उपन्यास में उन्होंने स्विटजरलैंड में होने वाली आत्महत्याओं व भारतीय परिवेश में होने वाली आत्महत्याओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। स्विटजरलैंड सर्वाधिक आत्महत्या दर वाला देश माना जाता है। जीवन के अत्यधिक रंगों के कारण बदरंग जीवन की उदासी, एकाकीपन के कारण आत्महत्याओं का आँकड़ा बढ़ रहा है। इसके विपरीत भारत में आत्महत्या का प्रमुख कारण कर्ज की समस्या, बेरोजगारी, जीवन संघर्ष, गरीबी आदि हैं।

कर्ज की समस्या–भारतीय किसान कर्ज की समस्या से अछूता नहीं है। किसानों की आत्महत्या के पीछे बैंकों एवं सहकारी समितियों का कर्ज बहुत बड़ी भूमिका निर्वहन कर रहा है। किसान ट्रैक्टर, बीज, खाद, ट्यूबवेल आदि की व्यवस्था के लिए बैंक से लोन या कर्ज लेता है। वह उम्मीद करता है कि फसल बिक जाने पर सारा कर्ज उतार देगा। प्राकृतिक आपदाओं और पूँजीपतियों के कारण उसका स्वप्न टूट जाता है। 'ढलती साँझ के सूरज' उपन्यास का पात्र दिलीप उद्रराव बैंक कर्ज न चुकाने पर आत्महत्या कर लेता है। उसकी इस मजबूरी का यथार्थ गाँव के सरपंच काशीनाथ नारायण जी के शब्दों में 'साढ़े चार लाख का कर्ज हो गया था...मेधा बैंक प्राइवेट लिमिटेड से लिया था कर्जा। तेरह प्रतिशत ब्याज पर। बैंक के लोन से ट्रैक्टर खरीदा था। कर्ज दलीप जी के पिता के नाम पर था। उम्मीद थी कि धीरे-धीरे किस्त भर देंगे पर लगातार दो साल से बाढ़ हो रहा था इसी बात को लेकर दोनों बाप बेटे में रोज घमासान होने लगा था।'[3]

इस उपन्यास का पात्र अविनाश किसान कल्याण के पथ पर अग्रसर होता है। वह किसानों की आत्महत्या के कारणों पर चर्चा करते हुए कहता है कि 'कर्ज मन-आत्मा को बंजर बना देता है। कर्ज के खूँटे से बँधी जिंदगी को फिर न बाप को दिखती है, न मुलगा दिखता है। सिर्फ दरवाजे पर चिपका सरकारी नोटिस।'[4]

संसाधनों की कमी–भारतीय किसान संसाधनों को जुटाने में बैंक से कर्ज लेता है। संसाधनों की कमी भी किसानी के लिए एक गंभीर खतरा है। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे सूखा या अति वृष्टि ने किसानी जीवन को नरक तुल्य बना दिया है। कथाकार के शब्दों में, 'पिछले दो साल से परेशानियाँ ज्यादा बढ़ गई थीं। पिछले साल सूखा पड़ गया था तो परेशानी में रहे। दिन-भर खेत में पड़ी दरारें

 ISSN 0975-

देखते ही आहें भरते रहे। इस साल आसमान खूब बरसा कि बारिश ही बर्बादी बन गई। बारिश के चलते दो बार बीज डाले, दोनों बार भयंकर बारिश में बीज बह गए, फिर बारिश के थमने पर कुछ दिन शांति से गुजरे, फसल तैयार हो रही थी कि फिर असमय बारिश जिसने बीज, उर्वरक, सिंचाई और कई महीने की मेहनत-सब पर पानी फेर दिया तो और कर्जा लेना पड़ गया।"[5]

सरकारी नीतियाँ एवं किसान–केंद्र और राज्य सरकारों की नीतियाँ भी किसान कल्याण में असमर्थ दृष्टिगोचर होती हैं। सरकार और अधिकारियों के बीच तालमेल न होने का खामियाजा बेबस किसान झेल रहा है। कर्ज के चलते आत्महत्या करने वाले किसान परिवारों को मिलने वाली आर्थिक मदद के संदर्भ में सरपंच काशीनाथ नारायण का कथन इस प्रकार है–'सरकार को तो नहीं देने का बहाना चाहिए जी...ऐसे कई केस हैं जहाँ आत्महत्या हुई लेकिन कुछ नहीं मिला। यहाँ मराठवाड़ा के अनंतपुर जिले में एक महिला किसान थी सुधामणि। उसने आत्महत्या की, लेकिन उसकी बेटी को आज तक कोई मुआवजा नहीं मिला। क्योंकि वह एक औरत थी इसलिए कोई उसे किसान ही नहीं मानता।'[6] इस उपन्यास का नायक अविनाश किसान की दयनीय स्थिति पर बाला साहब पात्र से चर्चा करता है। बाला साहब के शब्दों में, 'इतना सब हो रहा है और आपकी सरकार क्या कर रही है?'

'सरकार भाषण पिला रही है। आश्वासन खिला रही है। उसके लिए भूख से ऊपर धर्म है, इसलिए वह धर्म बेचने में लगी है...।'[7]

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और किसान–भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का जाल फैला हुआ है। किसान, मजदूर, मध्यम वर्ग को लूट उन्होंने स्वयं को पोषित कर लिया है। गाँवों में बिजली और चिकित्सा सुविधाएँ, सड़कें नहीं पहुँचीं, पर कोका कोला पहुँच गया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अधिक उत्पादन का लालच देकर हाईब्रिड बीज, रासायनिक उर्वरक बेच रही हैं।

कथाकार के शब्दों में 'लेकिन शेतकरी (किसान) को यह विश्वास दिला दिया गया है कि खेतों की उर्वर शक्ति को और उत्पादकता को बनाए रखने के लिए जरूरी हो गया है बढ़िया बीज और रासायनिक खाद। बीज, खाद और कीटनाशक बेचने वाली कंपनियों की चाँदी है।'[8]

इस उपन्यास का पात्र बाला साहब बहुराष्ट्रीय कंपनियों की तिकड़मबाजी के यथार्थ को व्यक्त करते हुए कहता है कि 'इन मल्टीनेशनल्स ने बैंक ने गुंडे पाल रखे हैं किसानों से वसूली के लिए, इन लोगों ने किसान की कमजोर कड़ी पकड़ रखी है, वह है सामाजिक प्रतिष्ठा। वह उसी को तार-तार कर देते हैं। घर के बाहर नोटिस चिपका देना, खुलेआम धमकाना इनके हथियार हैं।'[9] कथाकार मधु कांकरिया ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किसानों के शोषण को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

आत्महत्याएँ–किसी भी सभ्य समाज में आत्महत्या जैसी घटनाएँ, वो भी सृष्टि के अन्नदाता द्वारा। भारतीय समाज में किसानों द्वारा आत्महत्या जैसी घटनाएँ प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं। किसान किसी की सभ्य समाज का आईना कहा जा सकता है। भारत में किसान की स्थिति दयनीय हो चुकी है। सरकारी नीतियाँ, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के चक्कर में फँस किसान आत्महत्या कर रहे हैं। इस उपन्यास में पात्र विश्वेश्वर राव, सुधामणि, दिलीप उद्रराव आदि पात्रों ने कर्ज के कारण आत्महत्या कर ली थी। बाला साहब किसानों की आत्महत्या पर चर्चा करते हुए कहता है, 'जब तक मन बढ़ती है ऐसी खबरों पर जी जलकर कोयला हो जाता है। जानें क्यों लगता है मुझे यह मरना सिर्फ किसानों पर नहीं वरन् पूरी सभ्यता पर है। यह मरती हुई सभ्यता का लक्षण है। देखना आज किसान गिर रहा है कल पूरा देश गिरेगा।'[10] कथाकार के शब्दों में, 'वो

देखिए, वो खेत देख रहे हैं न?' उँगली से दिखाते हैं बालासाहब, 'वो देखिए, खेत के उस कोने में खड़े उस पेड़ के नीचे खाया था अरुण गिरि जी ने सल्फास (जहर)। खेत के उसी कोने में लिखी है आधे हिंदुस्तान की कहानी।'[11]

'ये देखिए आज का अखबार–लुधियाना। 36 साल के किसान जसवंत मोटर साइकिल पर अपने पाँच वर्ष के बेटे को घुमाने के बहाने निकले। बेटे को अपनी छाती से बाँधा और नहर में कूद गए। उन पर 6 लाख का कर्जा था। उनकी फसल खराब हो चुकी थी। सुसाइड नोट में लिखा था उन्होंने–मैं जानता हूँ कि मेरा यह छह लाख का कर्जा मैं तो क्या मेरा बेटा भी जीवनभर नहीं उतार पाएगा।'[12]

एमएसपी और किसान–किसान की फसल के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य तय न होना भी किसान के कर्ज का प्रमुख कारण माना जाता है। फसल की लागत दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। किसान को अपनी फसल का मूल्य तय करने का अधिकार नहीं जिसके कारण किसान का आर्थिक शोषण हो रहा है। यदि सभी फसलों का एमएसपी निर्धारित हो तो किसान कर्ज से बच सकता है। कथाकार के शब्दों में, 'सरकार को किसान की बू असह्य हो गई है इसीलिए उसने नीति बना ली है–बाजार आबाद और किसान बर्बाद। इसलिए समुद्र का सारा पानी बड़ी मछलिया ही पी जाती हैं। हमें तो जो भाव मिले उसी पर पारतुल में मिल वालों को बेच देना पड़ता है कपास। नहीं बेचें तो उधारी कैसे चुकाएँ, खाएँ क्या और रखे कहाँ कपास को? .....हम तो साफ कहते हैं सरकार को कि हमें आपका दान, आपके पैकेज नहीं, मूल्य चाहिए।'[13] बाला साहब फसल के दामों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहता है कि 'कृषि और बाजार का पूरा चरित्र ही इन सालों में पूरी तरह बदल गया है। दिन पर दिन लागत बढ़ती जा रही है। खर्च बढ़ते जा रहे हैं लेकिन उत्पादन नहीं बढ़ रहा और कपास के दाम नहीं बढ़ रहे। मुनाफा कुछ होता ही नहीं। बल्कि पिछले तीन साल से तो हालत यह है कि नुकसान झेल रहे हैं। हम तो खेती (किसानी) भी छोड़ दें, निकल जाएँ इस भूत जगह से, छोड़ दें पूर्वजों की जमीन का भी मोह पर कोई दूसरा काम तो मिले।'[14]

मधु कांकरिया ने अपने इस उपन्यास में किसान जीवन की त्रासदी को उजागर किया है। भारतीय समाज कृषि प्रधान रहा है। आज किसान कर्ज के कारण आत्महत्या करने को विवश हो रहा है। केंद्र और राज्य सरकारों का किसान के साथ सौतेला व्यवहार कृषक जीवन पर संकट खड़ा कर रहा है। सरकारी नीतियाँ भी किसान को राहत देने में असफल रही हैं। कर्ज के बदले किसानों की जमीनों को बैंक रेहन कर नीलाम कर रहे हैं। फसल उत्पादन की बढ़ती लागत और प्राकृतिक आपदाओं ने कृषक समाज की रीढ़ को तोड़ दिया है। आढ़तियों और कारपोरेट ने किसान को आत्महत्या करने के लिए बाध्य कर दिया है। साहित्य जगत में किसान विमर्श समाज और सरकार के लिए एक संकेत है कि यदि किसान इसी प्रकार शोषित एवं पीड़ित रहा तो वह दिन दूर नहीं जब दाने-दाने के लिए तरस जाएँगे। कथाकार मधु कांकरिया ने इस उपन्यास में कृषक जीवन की त्रासदी के साथ-साथ सरकार एवं कारपोरेट जगत के कच्चे चिट्ठे और कुरूप चेहरे को उजागर करने का सफल प्रयास किया। कृषक समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

संदर्भ

1. डॉ॰ हरदेव बाहरी, हिंदी पर्यायकोश, राजपाल एवं संस, दिल्ली, 2010, पृ॰ 751
2. स्वामी सहजानंद सरस्वती, खेत, मजदूर और झारखंड के किसान, पृ॰ 59
3. कांकरिया, मधु, ढलती साँझ का सूरज, पृ॰ 49-50

ISSN 0975-7350

4. वही, पृ॰ 64
5. वही, पृ॰ 63
6. वही, पृ॰ 53
7. वही, पृ॰ 64
8. वही, पृ॰ 68
9. वही, पृ॰ 60
10. वही, पृ॰ 71
11. वही, पृ॰ 60
12. वही, पृ॰ 71
13. वही, पृ॰ 70
14. वही, पृ॰ 65

बाबू मुकुट बिहारी लाल जैन महाविद्यालय

अन्तरराष्ट्रीय साहित्य-कला मंच भारतवर्ष

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला (उ.प्र.)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी 20-21 अगस्त 2022

राष्ट्र-संवर्धन में साहित्य की भूमिका

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री/डॉ./प्रो. .....रितु.....

ने दो दिवसीय हिन्दी साहित्य अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय सहभागिता की। इस अवसर पर आपने शोध पत्र राष्ट्र संवर्धन में मधु कांकरिया के कथा-साहित्य की भूमिका ....का वाचन भी किया।

(पवन कुमार जैन)	(डॉ. विनय पाण्डेय)	(प्रो. पी. के. भारती)	(डॉ. रमेश जोशी)	(डॉ. जय वर्मा)	(डॉ. महेश 'दिवाकर')
प्रबंधक बाबू मुकुट बिहारी लाल जैन महाविद्यालय	प्राचार्य बाबू मुकुट बिहारी लाल जैन महाविद्यालय	कुलपति श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय	प्रधान सम्पादक, विश्व अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी समिति, न्यूयार्क, यू.एस.ए.	निदेशिका, काव्य रंग, नाटिंघम, यू.के.	संस्थापक अन्तरराष्ट्रीय साहित्य कला मंच

आयोजन स्थलः- बाबू मुकुट बिहारी लाल जैन महाविद्यालय, बहजोई, सम्भल (उ.प्र.)

प्रमाण – पत्र

हरियाणा ग्रन्थ अकादमी
विद्या ददाति विनयम्

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

1-2 दिसम्बर, 2018

हिन्दी का वैश्विक सन्दर्भ : चुनौतियाँ और संभावनाएँ

आयोजक

हिन्दी – विभाग	हरियाणा ग्रन्थ अकादमी	अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी	पंचकूला	मुरादाबाद

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/सुश्री/डॉ०/प्रो० ऋतु रिसर्च स्कॉलर, पानीपत, ने दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि/बीजवक्ता/अध्यक्ष/विशिष्ट अतिथि/ प्रतिभागी के रूप में सक्रिय प्रतिभागिता की तथा विश्व बाज़ार और हिंदी विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत किया।

प्रोफेसर राजकुमार मित्तल	प्रोफेसर वीरेन्द्र सिंह चौहान	प्रोफेसर बाबूराम	डॉ० महेश दिवाकर	प्रोफेसर वेदप्रकाश वटुक
कुलपति	उपाध्यक्ष एवं निदेशक	संयोजक	संयोजक	केलिफोर्निया

आयोजन स्थल : डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन सभागार, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी (हरियाणा)

(S29)

शम्भु दयाल (पी० जी०) कॉलेज, गाजियाबाद

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान
लखनऊ

हिन्दी विभाग

शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय (गाजियाबाद)

(सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ.प्र.)

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

5-6 अक्टूबर 2018

विषय : भक्तिकाल के विविध परिदृश्य और प्रासंगिकता

संपोषित : उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ

प्रमाण पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि डॉ. / श्री / श्रीमती / सुश्री ऋतु शोधार्थी, श्री वैंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला ने हिन्दी विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद द्वारा 5-6 अक्टूबर 2018 को 'भक्ति काल के विविध परिदृश्य और प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय भागीदारी की एवं → तुलसी की भक्ति भावना विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया ।

समन्वयक
डॉ0 मंजु गोयल
प्राचार्या

संयोजक
डॉ0 पूनम सिंह

आयोजन सचिव
डॉ0 उर्विजा शर्मा

हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग दयाल सिंह कॉलेज, करनाल (हरियाणा)

हिन्दी संगम प्रतिष्ठान, न्यू जर्सी (अमेरिका)

के संयुक्त तत्त्वावधान में

उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा

के सहायता अनुदान से आयोजित

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्व पटल पर हिन्दी : विस्तार एवं सम्भावनाएं

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./सुश्री/श्रीमती/श्रीमान् ऋतु (शोधार्थी)

संस्था कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने सत्र के मुख्यातिथि/~~विशिष्टातिथि~~/~~बीज वक्ता~~/~~मुख्यवक्ता~~/~~सारस्वतातिथि~~/~~अध्यक्ष~~/प्रतिभागी के रूप में अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में सक्रिय प्रतिभागिता की एवं वैचारिक योगदान दिया।

इन्होंने हिन्दी और अनुवाद विषय पर अपना शोधपत्र भी प्रस्तुत किया।

डॉ. विजय दत्त शर्मा	अशोक ओझा	डॉ. रणधीर सिंह	डॉ. के.एल. गोसाई
निदेशक	अध्यक्ष	संगोष्ठी संयोजक	प्राचार्य (कार्यवाहक)
हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला	हिन्दी संगम प्रतिष्ठान, न्यू जर्सी (अमेरिका)	अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग	

10 जनवरी 2017 www.dsckarnal.org dscollege_knl@rediffmail.com